मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख सलंग अंक १४५ मई-२०१९

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

(१) परमपूज्य बड़े महाराजश्री के ७५ वें प्रागट्योत्सव अवसर पर श्री स्वामिनारायण म्युजियम में सम्पन्न संगीत समारोह समय की यादगार तसवीरें प.पू. बड़े महाराजश्री को केक खिलाकर जन्म दिन की शुभेच्छा देते शिखा पार्षदी से जाने हरिप्रकाश स्वामी। पू. बड़े महाराजश्री धर्मपत्नी के पर्व को सुनाने के बाद चैतन्य स्वामी को भेंट कर आशीर्वाद देते हुए पू. महाराजश्री और इंग्लैण्ड से आये हुए बेहिया ब्रदर्स की प्रस्तुति का आनन्द लेते हुए धर्मकुल परिवार। (२) अहमदाबाद मंदिर में पंच महाअभिषेक। (३) मूलावदर कमेश्वाकम (नार्थपोल) मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री। (४) वावडी (वैशाली) मंदिर के २५ वें पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी की अन्नकूट आरती करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री। (५) श्री स्वामिनारायण वाणिज्यकारिक मंडल के-२ गांधीनगर हुए कथा में सभी कार्यक्रम का प्रबन्ध किया गया था।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र
वर्ष - १३ ● अंक : १४५
मई-२०१९

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स : २७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ८२३८००१६६६
मो. ९०९९०९८९६९
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in
मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	श्री धर्मदेव की साँतवी पीढ़ी	०६
०४.	हे श्रीहरि मेरे दृष्टि के सामने रहें	०८
०५.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से अमृत वचन	१०
०६.	क्या हम सब महाराज के प्रिय है ?	१२
०७.	"अब हमें कोई न्यूनता नही है"	१३
०८.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१५
०९.	सत्संग बालवाटिका	१८
१०.	भक्ति सुधा	२०
११.	सत्संग समाचार	२४

अस्मदीयम्

विश्व के बड़े से बड़े लोकतन्त्र भारत देश में वर्तमान समयमें चुनाव चल रहा है। हमारा देश स्वतन्त्र होने के बाद इस चुनाव में लगभग पांच हजार करोड रुपया खर्च होने की सन्भावना है। यह एक बडे शहर के वार्षिक बजट जितना होता है। इस समय गर्मी का मौसम है। अहमदाबाद शहर में ४४ डीग्री के उपर तापमान हो जाता है। जो कि अभी मई जून और जुलाई आते-आते गर्मी कितनी पडेगी। यह तो ईश्वर को ही पता है।

प्रत्येक चुनाव में लोग (पक्ष-विपक्ष वाले) निम्न स्तर की भाषा का प्रयोग करते है। और अपने नीचले स्तर पर चले जाते है। यह हिन्दु संस्कृति का घोर अपमान है। समझदार और सजग नारगिक इस पर ध्यान देते है। आज का शिक्षित युवक अधिक जागृत है। जब हम अपना मिजाज बतायेगे तब गिरी हुई भाषा का उपयोग करने वालो की अवस्था खराब हो जायेगी। तथा राजनितिज्ञो को पाठ पढादेगे। इसमें कोई अतिशयोक्ति नही है।

अब जो लोग के लिये, समाज के लिये देश के लिये कार्य करेगे। उन्हे ही बिजयी बनायेगे। शेष केवल बात करने वाले, अनुपयोगी बोली बोलने वाले गायब हो जायेगे। ये बात निश्चित है।

आधारानंद स्वामी की बातो में सर्वोपरी श्रीहरि कईबार अंग्रेजो के शासन की प्रसंशा किये है। साथ में ये भी कहे है कि आप नीति से राज्य करेगे तो आप का राज्य अच्छा और लम्बा चलेगा। यदि नीतिमत्ता छोडे देगे तो प्रजा आप को त्याग देगी। यह बात आज सिद्ध दिखाई देती है। भगवान जब ऐसी बात करते हो तो यह बात सदैव सत्य ही होती है।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

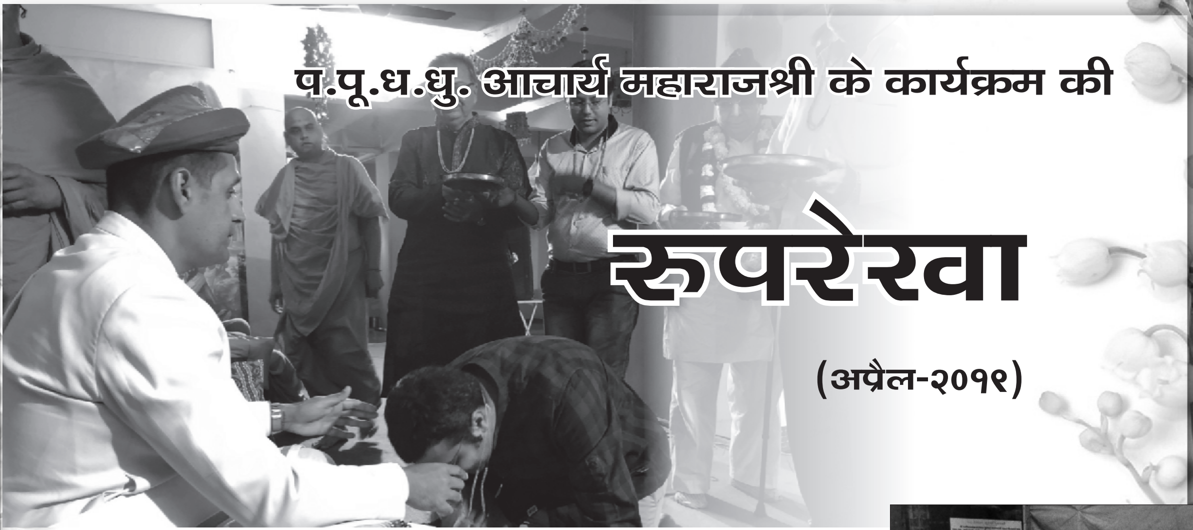

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(अप्रैल-२०१९)

११-१२ नारायणघाट (कच्छ) श्री स्वामिनारायण मंदिर पर आगमन।

१३ श्री स्वामिनारायण मंदिर सलकी (ता. दहेगाम) पर आगमन।

१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर संत महादीक्षा विधिको अपने शुभ हाथो द्वारा पूर्ण किये।

१५ श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडल पाटोत्सव अवसर पर आगमन।

१६-१७ श्री स्वामिनारायण मंदिर (भुज-कच्छ) पर आगमन।

१९ श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली (वासणा) श्री हनुमान चालीसा कथा अवसर पर आगमन।

२० श्री स्वामिनारायण मंदिर गुलाबपुरा पाटोत्सव पर आगमन।

२५ श्री स्वामिनारायण मंदिर जाईवा और रोहिशाला (हालार मूली देश) पर आगमन।

२८-२९ श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडवी-कच्छ रजत जयंती पाटोत्सव पर आगमन।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(अप्रैल-२०१९)

१४ बापुनगर एप्रोच श्री स्वामिनारायण मंदिर सत्संग युवा शिबिर प्रसंग पर आगमन।

२१ शिलज - अहमदाबाद सत्संग सभा में पधारना।

२७ चाँदखेडा प.भ. निमेषभाई पटेल के यहाँ कथा के अवसर पर पधारना।

श्री धर्मदेव की साँतवी पीढ़ी

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

हमारे ईष्टदेव सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान ने मनुष्य शरीर धारण करने के लिये धर्मकुल की गोद को पसंद किया । इस भारत भूमि के उपर धर्मवंश सर्वश्रेष्ठ पवित्र परम्परा है। धर्मदेव के पूर्वजो का इतिहास – कथा सुनने से पता चलता है कि पीढ़ीयो के गुण यश पवित्रता से प्रेरित होकर अक्षरधाम के अधिपति धर्म देव के खून से मनुष्य देह धारण करने का निमित लिये । एकत्तर पीढ़ीयो के जीवनदर्शन को ज्ञात करनी तो कठिन है । लेकिन सात पीढीयो का जीवन दर्शन करे तो जीवन धन्य हो जाता है।

विक्रम संवत वर्ष चौदह में नेपाल देश के महाराज के राज्य में 'देवहा' सरिता नदी के किनारे आये । लता–तरु नंदवन के बीच में एक पवित्र 'रकहट' नामक गाँव है। वहाँ पर चारो वर्णाश्रम के लोग रहते थे । वहाँ पर सरयूषारीय विप्र वेद–वेदान्त के ज्ञाता धर्म–नियम का पालन करने वाले श्रीकृष्ण भक्ति में विशेष संयमित जीवन व्यतीत करके दूसरे को धर्म, ज्ञान, वैराग्य का उपदेश देने में पवित्र गोरख पाण्डेय अटकवाले ''रामप्रसाद'' नाम के जो वेद–वेदान्त ज्योतिष दर्श; ऐसे छ शास्त्रो के विद्वान पंडित जो नेपाल नरेश के गुरु पद पर नियुक्त हुए थे । नेपाल की राजधानी में राज्य सत्ता से सम्मानित पांडेय धरणीधर की प्रसिध्धिपूरे राज्य में एक आदर्श जीवन जीने वाले पवित्र सदाचारी राजगुरु के रुप में होती थी । नेपाल राज्य के चारो वर्णो वाले लोग उन्हे अधिक सन्मान देते थे । राज्य सभा में नेपाल नरेश प्रतिदिन राजगुरु पाण्डेय घरणीधर शास्त्री का पूजन करके आशीर्वाद प्राप्त करते थे । गुरु की कृपा से राजा की यश–कीर्ति धन–बल में लगातार वृद्धि हुई । उनकी पहचान गोरख पाण्डेय अटक उनमें तेरह घर के उच्च कुल में रामानुज सिद्धान्त के विशिष्ट द्वैत के अनुयायी, सामवेद, कौथुमीशाखा, सावर्णीगोत्र, तीन प्रवर भार्गव वैतहत्य, साव्तेस, कुलगुरु हनुमानजी, कुलमाता कमलादेवी से विभूषित पाण्डेयधरणीधर के ''गंगाप्रसाद'' नाम के पुत्र पैदा हुए । वे गोरखपुर में आकर रहने लगे । गोरखपुर के राजा द्वारा राजसन्मान घर–धन, सम्पत्ति भूमि को प्राप्त किये । गंगा प्रसाद पाण्डेय अपने सरवरिया कुल परम्परा की कीर्ति उजागर करते हुए वेद उपनिषद दर्शन जैसे शास्त्रो के ज्ञाता बने । एकबार काशी में शास्त्र चर्चा में निमन्त्रण मिलने पर काशी गये । इस शास्त्रार्थ में भाग लेने

वाले वेद पुरुष गंगाप्रसाद के प्रश्नो को उत्तर नही दे सके। उन्होने अपना पराजय स्वीकार करके गोरखपुर राज्य के गंगाप्रलाद पाण्डेय को विजयी घोषित करके राज्य सन्मान प्राप्त किये थे। सूर्य की गति के समान यशप्राप्त करे गंगाप्रसाद का जय-जयकर दिन-प्रतिदिन बढने लगा था। तब अन्य लोग द्वेष करने वाले वहाँ पर आ गये। उनकी यश कीर्ति की पराकाष्ठा देखकर जलने लगे। तथा अपमानित करने का कारण खोजने लगे। एक स्वाभिमानी विचारधारा वाला होने के कारण गंगा प्रसाद पाण्डेय गोरखपुर छोडकर थोडी दूर अपने मामा के गाँव के पास सहजनवा (गोरखपुर जिला) में रहने लगे। तब से गोरख पाण्डेय अटक को हटाकर इटार पाण्डेय लिढाना शुरु कर दिये। उनके पुत्र उन्ही की तरह ''लक्ष्मण शर्मा'' नाम के हुए। लक्ष्मण के घर ''बंशीधर'' नाम के पुत्र पैदा हुए। वेदो का अध्ययन करने के लिये योग्य कुलानुसार मुख से हरि का जप करते थे। पंचांग के पारंगत थे। उनके पुत्र ''वेदमान'' नाम से हुए। जो नीतिशास्त्र में कुशल तथा दंसो दिशा में प्रशंसा हो रही थी। उनके पुत्र ''कन्हीराम'' के हुए जो एक आदर्श परमर्थी के रुप में पैदा हुए। वे काफी समय तक मेह गाँव में रहे थे। वहाँ के सुरनेत्र नामक राजा के कुल परम्परा के पूज्य पंडित भी रहे थे। समयानुसार अपने जन्म स्थान इटारपुर के कुल गुरु हुए थे। उसी दिन से इटारपुर गाँव ईटार पाण्डेय के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उनके पुत्र विधाता आज ब्रह्माजी के अंश रुप ''बाल शर्मा'' नाम के हुए। वे बाल शर्मा वेदशास्त्र में पारंगत धर्म प्रेमी और जितेन्द्रियी थे। पवित्र कुल परम्परा में पैदा होने के कारण ये बालशर्मा अनेक यज्ञ किये थे। उनकी भाग्यवती नाम की औरत से विवाह हुआ था। ऐसे परम पवित्र शुद्ध वंश परम्परा में विशुद्ध अंतकरण वाले दम्पती माता-पिता बनने का मनसे निर्णय किये। सम्पूर्ण विश्व को धारण करने वाले स्वयं धर्मदेव का बद्रिकाश्रम में दुर्वासा मुनि के शाप को ग्रहण करके पृथ्वी पर प्रगट हुए। देवता को ज्ञात होने पर नंदनवन से पुष्प लाकर पुष्पवर्षा किये थे। जय जयकार किये। विक्रम संवत १७९६ में प्रमोद संवत्सर में शरदऋतु में बुधवार, कार्तिक सुद एकादशी तिथि के पास दिवस पर उत्तर भाद्रपद नक्षत्र में व्रजनाम योग में कल्याणी नामक रुप में कुम्भ लग्न में मंगल बुध, गुरु और शुक्र ये चार ग्रह केन्द्र स्थान में रहकर मनुष्य शरीर धारी साक्षात् धर्मदेवपुत्र के रुप में प्रगट हुए। पिता बाल शर्मा दस गाँव के अन्दर शक्कर बाँटकर खुशी मनायी गई। गाय-देव-ब्राह्मण की पूजा करके खुश हुए। पिताजीने उनका नाम हरिप्रसाद रखा था।

ऐसे सर्वश्रेष्ठ पवित्र परम्परा में सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवानने मनुष्य आकर धारण करके धर्मकुल के रक्त को पवित्र किये।

आज भी उद्‌वीय परम्परा में धर्मदेव की रक्त परम्परा श्रीजी महाराज के समान सन्मान के साथ आदरपूर्वक पूजन किया गया। इस सम्प्रदाय में जब तक धर्मवंशी की पूजा होगी। तब तक संसार में सत्संग शुद्ध रहेगा। और जब धर्मकुल को छोड़कर अपने विचार शैली का विस्तार करेगे तो भगवान क्या करेगे ? ये वही जान सकते है।

''श्री स्वामिनारायण मासिक'' के प्रतिनिधी प.भ. श्री डाह्याभाई चेलाभाई बूटीया (कालीयाणा) द्वारा ट्रेन्ट श्री स्वामिनारायण मंदिर के शताब्दी पाटोत्सव महोत्सव के अवसर पर ७८ स्थायी सदस्य बनाकर प्रति सदस्य रु।. १००/- ने सौजन्य भेट दिये थे। धन्य है ऐसे निष्ठावान भक्त।

हे श्रीहरि मेरे दृष्टि के सामने रहें

– शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी (अमदावाद)

श्रीहरि महिमाष्टक - वसंततिलकावृतम् शुकानन्द मुनि कृत्

स्वामिन्परात्पर विभो पुरुषोत्तमादय नारायणाक्षरनिवास कृपानिधान ।
श्रीकृष्णनिर्गुण सदीश्वर दिव्यमूर्ति हे श्रीहरे मम भवान् द्दशिगोचरोऽस्तु ॥१॥
देवाधिदेव परमेश्वर वासुदेव योगेश्वरनियामक शास्त्रयौने ।
भूमंस्तपः प्रिय महापुरुषाक्षरात्मन् हे श्रीहरे मम भवान् द्दशिगोचरोऽस्तु ॥२॥
एकान्तधर्मधर सेश्वरसांख्ययोग मार्गप्रवर्तक ऋषीश्वरवृंदजुष्ट ।
भक्तेप्सितप्रदवराभयपाणिपद्प हे श्रीहरे मम भवान् द्दशिगोचरोऽस्तु ॥३॥
सर्वेश्वरेश हृषिकेशपते परात्मन् सत्संगलभ्यपथयोगदसुप्रवृत्ते ।
एकन्तिकप्रिय भवांबुधिपारदायिन् हे श्रीहरे मम भवान् द्दशिगोचरोऽस्तु ॥४॥
श्रीमन्नवीनजलदासितसुंदरास्य सत्पुंडरीकनयनप्रथितप्रताप ।
नैकावतारपरिरक्षितसाघुवृंद हे श्रीहरे मम भवान् द्दशिगोचरोऽस्तु ॥५॥
नैकांडनायकनिषेवितपादपदम् कल्याणकारीगुणवृंदविभूषणाढ्य ।
सूक्ष्मोज्ज्वलांबरविधारणशोभितांग हे श्रीहरे मम भवान् द्दशिगोचरोऽस्तु ॥६॥
धर्मान्ववायनिहितस्वकदेशिकत्व निष्कामभक्तपरमप्रिय नैष्ठिकेन्द्र ।
ब्रह्मण्यदेव सकलाश्रितसौख्यकारिन् हे श्रीहरे मम भवान् द्दशिगोचरोऽस्तु ॥७॥
अज्ञानसंतमसनाशनबोधभाव कामादिशत्रुगणभीतिदनामधेय ।
पाखंडखंडदलन प्रणतात्मबोध हे श्रीहरे मम भवान् द्दशिगोचरोऽस्तु ॥८।
हे भक्तिधर्मसुत हे हरिकृष्ण नाथ हे नीलकंठ कलितारण पूर्णकाम ।
सौम्यस्वभाव शरणागतवत्सलात्मन् हे श्रीहरे मम भवान् द्दशिगोचरोऽस्तु ॥९॥
स्वीयेतितेजसिपरेक्षरसंज्ञके च धाम्न्यक्षरात्मनिलये निजपार्षदाग्यैः ।
प्रेम्णा निषेव्यचरणाब्जशुकेन चात्र हे श्रीहरे मम भवान् द्दशिगोचरोऽस्तु ॥१०॥

भगवान श्री स्वामिनारायण के लेखक और सदैव साथ रहने वाले शुकानन्द मुनि जिन्हे शुकमुनि के नाम से सभी जानते है । वे अपने प्रभु से कभी न बिछडे सदैव हमारी आँखो के सामने रहे, दर्शन दे ऐसे भाव से युक्त होकर श्रध्धा से स्तुति प्रार्थना अष्टक की रचना किये थे । इस का गायन करने से भगवान हृदय से पूर नही होते है।

स्वामिन्परात्पर विभो पुरुषोत्तमादय नारायणाक्षरनिवास कृपानिधान ।
श्रीकृष्णनिर्गुण सदीश्वर दिव्यमूर्ति हे श्रीहरे मम भवान् हरिगोचरोऽस्तु ॥१॥

अक्षर पर्यन्त सभी जीवो के नियन्ता स्वामी है । जिसके कोई नियन्ता स्वामी नही है । सर्व से अक्षर से परे जिन्हे हम जान नही सकते है । सभी में अन्तर्यामी व्यापक रुप में है । सभी पुरुषो में उत्तम पुरुषोत्तम है । सभी के कारण आदि पुरुष है । सभी को आश्रय देने वाले है । अपने अक्षरधाम में प्रतिदिन निवास करते हो । जीवो के उपर कृपा के सागर हो । सभी का पालन करने वाले है। आप में मायावी गुण नही है । सर्व कल्याणकारी गुणो से सजे है । सदैव सत्य है । सभी के नियामक है । सदैव द्विभुजि दिव्य आखर रुप है । ऐसे श्रीहरि आप हमे नित्य दर्शन देकर मेरे नजरो के सामने प्रत्यक्ष दर्शन दे ।(१)

देवाधिदेव परमेश्वर वासुदेव योगेश्वरनियामक शास्त्रयौने ।
भूमंस्तपः प्रिय महापुरुषाक्षरात्मन् हे श्रीहरे मम भवान् द्दशिगोचरोऽस्तु ॥२॥

देव लोक में निवास करने वाले देवता भी अधिपति नियंता है । और ब्रह्मांड के अधिपति ईश्वर के भी नियन्ता है । सम्पूर्ण विश्व में अपने अन्तर्यामी शक्ति से सभी जगह व्याप्त है । योग की साधना करने वालो के लिये ध्येय मूर्ति नियन्ता है । स्वयं अक्षर आत्मा अन्तर्यामी होकर नियमन करते है । जिसके स्वरुप को जानने के लिये वेद सत्यशास्त्र और आगम-निगम पुराण स्मृति मूल तत्व है । पृथ्वी पर अवतार लेकर तप करने वाले तथा भक्तो के तप परायण है । आप तप प्रिय है । पुरुषो में पुरुषोत्तम है । अक्षर के भी आत्मा है जिनकी शरीर अक्षर है । ऐसे श्रीहरि मुझे आप नित्य दर्शन दे ।(२)

एकान्तधर्मधर सेश्वरसांख्ययोग मार्गप्रवर्तक ऋषीश्वरवृंदजुष्ट ।
भक्तेप्सितप्रदवराभयपाणिपद्प हे श्रीहरे मम भवान् द्दशिगोचरोऽस्तु ॥३॥

भगवत् धर्म जिसे एकान्तिक धर्म कहते है । जो चार धर्म भक्ति ज्ञान वैराग्य युक्त है । ऐसे धर्म के पोषक और धारक है । निंवीज सांख्य और योग के मत को गलत करतेसांप्य और योग शास्त्र मत को कहते है । असंख्य ऋषि मुनियो अर्थात् पाँच सौ परमहंसो के समूह से सदैव पूजित है । अपने एकान्तिक भक्तो की सभी मनोकामना पूर्ण करते है । जीव ईश्वर, माया और ब्रह्म

सभी को प्रिय है। सम्बन्धबाँधने योग्य है आफ की शरण में जो आता है उसका कल्याण करते है। तथा अभयदान देते है। प्रभु हमें आप प्रतिदिन मेरे समक्ष रहकर दर्शन प्रदान करे।(३)

सर्वेश्वरेश हृषिकेशपते परात्मन् सत्संगलभ्यपथयोगदसुप्रवृत्ते ।
एकन्तिकप्रिय भवांबुधिपारदायिन् हे श्रीहरे मम भवान् दृशिगोचरोऽस्तु ॥४॥

अनंत कोटी ब्रह्माडं के ईश्वरो के ईश्वर है विश्व के नियामको के नियामक है। सर्व चेतन के नियामक है। जीव प्राणी मात्र इन्द्रियो के नियन्ता है। अन्तःकरण में प्रवेश करके नियमन करते है। पर से परे अक्षर ब्रह्म से भी परे है और उनकी आत्मा है। वे परमेश्वर सत्पुरुषो सत्य शास्त्रो तथा सदाचार से प्राप्त किये जा सकते है। रास्ते में भटक गये जीव को मोक्ष का मार्ग बताते है। एकान्तिक भक्तो के लिये प्रिय है। उनके शरण में आने वाले भवसागर तेर जाता है। ऐसे श्रीहरि आप नित्य दर्शन देकर मेरी नजरो के सामने प्रत्यक्ष रहे।(४)

श्रीमन्नवीनजलदासितसुंदरास्य सत्पुंडरीकनयनप्रथितप्रताप ।
नैकावतारपरिरक्षितसाघुवृंद हे श्रीहरे मम भवान् दृशिगोचरोऽस्तु ॥५॥

श्रीहरि को मुख कमल अषाढ मास के घनघोर जल से युक्त मेघ की तरह श्याम है। सरोवर में सदैव ताजा कमल की पंखुडी की तरह विशाल नेत्रो की शोभा दिखाई देती है। जब भी देवो और मानवो को आवश्यकता पडती है तब आप अवतार लेते है। सज्जनो की रक्षा करते है। ऐसे श्रीहरि मुजे आपका प्रतिदिन मेरे नजरो के सामने आकर दर्शन दे।(५)

नैकांडनायकनिषेवितपादपदम् कल्याणकारीगुणवृंदविभूषणाढ्य ।
सूक्ष्मोज्ज्वलांबरविधारणशोभितांग हे श्रीहरे मम भवान् दृशिगोचरोऽस्तु ॥६॥

अनंत कोटी ब्रह्मांडो के अधिपति शासक जिसके चरणो की वंदना करते है। उनेक स्वरुप में सदैव असंख्य कल्याणकारी गुणो के समुदाय से शोभित अलंकृत है। ऐसे श्रीहरि आप हमे प्रतिदिन अपना दर्शन दे मेरे नजर के सामने प्रत्यक्ष रहकर दर्शन दे।(६)

धर्मान्ववायनिहितस्वकदेशिकत्व निष्कामभक्तपरमप्रिय नैष्ठिकेन्द्र ।
ब्रह्मण्यदेव सकलाश्रितसौख्यकारिन् हे श्रीहरे मम भवान् दृशिगोचरोऽस्तु ॥७॥

भागवतधर्म जो एकान्तिक धर्म के पोषण और रक्षण के लिये जगत के जीव के गुरुपद धारण किये है। निष्कामी भक्त जिसे प्रिय है। तथा भक्त उन्हे प्रिय है। ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने वाले अति श्रेष्ठ है। तीन देहो से विलक्षण अपनी आत्मा को ब्रह्मस्वरुप देव है। उनके भक्त उन्हें प्रिय है। अपने आश्रितो को महान सुरक्षा देते है। ऐसे श्रीहरि आप हमें प्रतिदिन साक्षात दर्शन दे।(७)

अज्ञानसंतमसनाशनबोधभाव कामादिशत्रुगणभीतिदनामधेय ।
पाखंडखंडदलन प्रणतात्मबोधहे श्रीहरे मम भवान् दृशिगोचरोऽस्तु ॥८॥

जिसका सहारा लेने से अहंकार, ममत्व, मेरा, अज्ञान रुपी अंधकार दूर हो जाता है। जिसके नाम स्मरण मात्र से काम-क्रोधअंतशत्रु नष्ट हो जाते है। जिसकी बाणी पाखंड धर्म का खंडन करती है। और आत्मज्ञान आत्मस्वरुप का ज्ञान और परमात्मा के रुप का ज्ञान देता है। ऐसे श्रीहरि आप हमें नित्य दर्शन देकर मेरे सामने रहा करे और दर्शन दिया करे।(८)

हे भक्तिधर्मसुत हे हरिकृष्ण नाथ हे नीलकंठ कलितारण पूर्णकाम ।
सौम्यस्वभाव शरणागतवत्सलात्मन् हे श्रीहरे मम भवान् दृशिगोचरोऽस्तु ॥९॥

पृथ्वी के उपर मनुष्य शरीर धारी भक्ति धर्म के पुत्र है हरिकृष्ण हे नाथ हे नीलकंठ, हे प्रभु कलियुग के दोषो से रक्षा करने वाले काले तारण। अपने भक्तो को कलियुग में तारने वाले है। स्वयं पूर्णकाम है। और अपने आश्रितो को पूरा करते है। जिसका स्वभाव सदैव शांत एवम् सौम्य है। शरणागत के उपर वात्सल्यभाव रखते है। शरणागत आप को प्रिय है। ऐसे श्रीहरि आप हमे अपना प्रतिदिन दर्शन दे तथा नजरो के समक्ष दर्शन दे।(९)

स्वीयेतितेजसिपरेक्षरसंज्ञके च धाम्न्यक्षरात्मनिलये निजपार्षदाग्यैः ।
प्रेम्णा निषेव्यचरणाब्जशुकेन चात्र हे श्रीहरे मम भवान् दृशिगोचरोऽस्तु ॥१०॥

अक्षरधाम मे स्थित सर्वेश्वर भगवान श्री स्वामिनारायण के चरण कमल की सेवा भक्ति उपासना अपने प्रिय भक्तो से प्यार करते है। इसी प्रकार इस कलियुग में मनुष्य देहधारण करके आपकी सेवा का अवसर हमे मिला है। शुकमुनि के बाद इस स्तोत्र का पाठ या मनन करने वाले सभी भक्तो को दैते है। ऐसे श्रीहरि आप हमें नित्य दर्शन दे तथा नजरो के समक्ष बने रहे। (१०)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से अमृत वचन

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

अहमदाबाद मंदिर श्री नरनारायणदेव के १९७ वे पाटोत्सव अवसर पर ता. ९-३-१९ : प्रातः इस नरनारायणदेव के मंदिर में कही कील रखने की जगह मिले तो आप भाग्य शाली है। अभी सभा में २०% उपस्थिति हो तो भाग्यशाली है । क्यो कि यहाँ देव की महिमा है । दर्शन की महिमा है । देव की प्रधानता है । व्यक्ति की प्रधानता नही है । सभी ने देवको साक्षात् देखा है। अनुभव भी है। अभी लालजी महाराज कह रहे है । महाराजजी के जीवन चरित्र के उपर 'सीख' नामक एपिसोड फिल्म बनने जा रही है। उस में विशेष शिक्षापत्री, सत्संगिजीवन आदि ग्रन्थो के आधार महाराज के वचन तथा चरित्र को आज की पीढी समझ सके ऐसा सरल प्रयास किया गया है। यह जिम्मेदारी तो लालजी महारजा की है।

अपन इस सभा मंडप में कई सभा ये हुई है। प्रत्येक कथा वार्ता होती है। दो सदी से होती है। महाराज बोले है कि विना कथा वार्ता के अच्छे गुण नही आते है । महाराज बोले कैसी कथा ? कथा की चोटी है । टी.वी. चैनेल बदले और कथा बदली ! हँसी कर रहे है। इतनी यदि कथा छोटी तो पूर्ण ब्रह्मांड सत्संगीन बन सके वरन भगत तो हो ही जाते । जो जिसका उपासक है उसका भगत तो बन ही जाता लेकिन नही बनते है । महाराज ऐसा दबाव नही दिये है कि आप कितन समय और दिन कका सुनते है । देव के पास बैठकर जो महाराज के थोडे चरित्र, वचन, आज्ञाओ को सुने तो तथा मनन करे तो वह भगवान नकले जाता है । प्रातः उठकर समाचार पत्र खोले तो उसमें संसार की तरह-तरह की बाते दिखती है। राम वार्ता कहते है। भगवान वाली वार्ता राम कथा कहा जाता है। राम कथा पश्चात मनन न करने पर पुनः समाप्त हो जाता है। फिर से प्रारम्भ करना पडता है।

नंद संत श्रुति में लिखे है। एकबार दर्शन हो गया । मूर्ति अर्न्तमन से निकलती नही है । ब्रह्मानंद स्वामी भगवान को परखने गये । पहचानना भी बडी बात है । महाराज का दर्शन करने के बाद ब्रह्मानंद स्वामी जीवन से कभी बाहर ही नही आये । महाराज के मिलने के बाद ब्रह्मानंद स्वामी से कई राजने कहा मेरा चरित्र लिखे, मेरे लिये कविता लिखे। स्वामी बोले अब वे सब बात भूल जाये। इस मुख से खीर खाये है कोयला नही खा सकते है। कई लोग यात्राक रते है। तो केवल यात्रा का नाम होता है । केवल यात्रा के काम पर घुमने जाते है । दोनो सार्थक हो उसमें कोई बात नही है। तीर्थ मे दर्शन करे या न करे, भोजन की बात पहले होती है । भोजन की शिकायत अधिक मिलती है । महाराज कहते है तीर्थ में अपने जेब से खर्च करना चाहिए। मैं यह नही कह रहा हूँ कि खाईये मत ? आपके पैसे से ही सहायता मिलती है। अर्थात् उपयोग करे । रास्ते में कोटा या जयपुर आये । शाम को आपके पैसे से ही खिचडी कढी बनती है। यात्रा का

उद्देस्य नहीं भूलना चाहिए । मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि सामने सिंहासन पर बिराजमान देव का दर्शन मिला है । उसे अधिक यात्रा का महत्व हो सकता है।

महाराज की बात सुनने के बाद सोचना पडता है । मनन करना चिंतन करना, जैसे व्यापार में चिंता करते है । जमा उधार का जैसे चिंता होती है । ऐशी चिंता यदि भगवान की होतो विना लिफ्ट के सामने खडे रहे । निदिध्यास सत्य का अर्थ किसी दिन शब्दकोश में देखना मैं अपनी पूजा में अपने मंदिर से प्राप्त होता वचनामृत रखता हूँ । एक वचनामृत, एक पंक्ति वचनामृत पढे इसका पर्यात समझने के लिये उशका चिंतन लगातार करते रहे । पूरा पढना अलग बात है । जैसे महाराजजी के चेष्ठा के पद बोले जाते है । बडे लोग करते होगे । भक्त नियम रखे । तेजी से करने पर यथार्थ सुख नही मिलता है । धीरे समजकर पढने पर अति अच्छा लगता है । उपमा वाले अद्विितीय पद है । पहला तो श्रीहरि के चरणो की वंदना करु........ इतना अधिक नहीं ? इसके आगे कैसे बढ सकते है। आधी पंक्ति में शास्त्र का सार मिल जाता है । यह समझ में आ जाने पर भटकने का कोई अवसर ही नही मिलता है । आप के लिये यह बात नही है । लेकिन पत्थर जैसे देव पूजते है । तथा काला, पीला, लाल, सफेद धागे बाँधते है तथा ऐसी अंगुठी पहनते है । उनके लिये यह बात है । महाराज का स्वभाव किसी दिन जाने । जाने-पहचाने विना लगाव नही होता है । पहचान पर गुण दिखाई देता है तो लगाव होता है । इससे महाराज के वचन और आज्ञा का पालन होगा ।

मैं कई बार कहता हूँ कि किसी दुखी को देखकर दुख हो खुश न हो इसका अर्थ अति भाव पूर्ण है ये पद दर्शन करते-करते लिखे गये है । ब्रह्मांद स्वामीने आँखे झलकाई हो । महाराजजी शब्द बोले इतने में कीर्तन के नये पद की रचना हो जाती थी । खमाय देशी शब्द है । ''खमातु नथी'' ऐसा प्राय: लोग बोलते है । जब अधिक पीडा होती है तो यह शब्द निकलता है । पूजा की सीमा देखे तो अपे पन की सीमा नही लाँधसकते है । महाराज का स्वभाव कैसा है ? दया आणी रे, अति आकला थाय.... आप अन्त में कब व्याकुल हुए थे । सोचे ! कोई आदमी जब व्याकुल हो जाता है तो उसकी स्थिति कैसी हो जाती है ? क्या करे - क्या न करे ? आगे पीछे होने लगता है । अपना सोचे तो समझ में आ जाता है । व्याकुल होना वजनदार शब्द है उसके आगे का विशेषण अन्न, धन, वस्त्र, देकर सकते है । महाराज की स्वाभाविक चेष्ठा १० मिनट में बोल दे तो स्वभाव यथार्थ ने नही जाना जा सकता है । पढने के लिये मात्र पाठ न करे । शब्दो को जीवन में उतारने का प्रयास करे । पैसा देकर भाडे से या उधार करके नही लिखा गया है । नंद संतो के मुख से सहज रुप से शब्द निकले है।

तीर्थ करने जाना पडे तो महापराण करना है । बाकी अडसठ तीरथ चरणे, कोटि गया काशी, शब्द किसके है । मुक्तानंद स्वामी रामानंद स्वामी के शिष्य महाराज से अधिक उम्र में बडे महाराजभी भी उनके प्रति गुरुभाव रखते थे, और सत्संगिनी ''माँ'' की उपाधी मिला था । हम प्रतिदिन आरती गाते है । विचार कें ये आवश्यक है । ये शब्द बनाये जा सकते है लिखे जा सकते है वैसा नही है । जिन के लिये ये शब्द लिखे गये है । उन्हे देव, भगवान के सानिध्य में हम लोग बैटे है । अपनी भाग्य कम है क्या ? ये भगवान और सत्संग को बनाये रके हम सब की जिम्मेदारी है । अब आनंद की बात यह है कि इस देव का २०० वाँ पाटोत्सव कुछ दिनो में आने वााल हो तैयारी रखना, किसकी ? तनाव में न आये पैसा माँगा जायेगा । किसी को यजमान नही रखना है । फिर भी सभी यजमान रहेगे । जिनको लाभ लेना है उन्हे ढाई हजार रुपये जमा करना है । सभी का यह उत्सव है । किसी एक का नही है । जिसको भगवान ने अधिक सुखी किये है । सुखी अर्थात् क्या ? हम मानते है कि अपनी व्याख्यानुसार बाकी हनुमानजी की पूंछनुसार, यदि अधिक इच्छा हो तो गर के अन्य सदस्यो के नाम २५०० के गुणाक में रुपया जमा कर सकते है । ऐसा उत्सव हो जिसमें सभी भाग ले सके । जिस में प्रतिस्पर्धी न हो पत्रिका में नाम भी न हो । श्री नरनारायणदेव के पाटोत्सव और वह तारीख सिम्पल है । आप सभी यजमान ही है । पीछे

(पेईज नं. १४)

क्या हम सब महाराज के प्रिय है ?

- जयंतीभाई के. सोनी (अहमदाबाद)

हम सभी महाराज को खुश करके आत्यंतिक कल्याण प्राप्त करले यही जीवन का उद्देश्य है । जिन्हे महाराज को खुश करना आ गया उनका कल्याण हो जाता है । भजन, भक्ति, व्रत, उपवास, धन कितना भी हो यदि भगवान खुश नहि हुए तो समझना मोक्ष मार्ग में कमी है ।

पूरे वचनामृत में गढडा अंत्य का २५ वाँ वचनामृत एक ऐसा है जिसमें कई प्रश्नोत्तर है । उनमें से राजबाई ने श्रीजी महाराज से प्रश्न पूछे है कि किस गुण से आप खुश तथा किस गुण से नाराज होते है । इसका सीधा अर्थ है कि यदि महाराज खुश है तो सहज कल्याण हो जाता है । महाराज के नाराज होने पर कितनी भजन करने कल्याण नही हो सकता है । जो प्रभु को खुश करले उसे अक्षरधाम की प्राप्ति सरल हो जाता है ।

महाराज को क्या प्रिय है क्या अप्रिय है महाराज उपरोक्त वचनामृत में कहे है । उसमें कई वाणी के दोष भी है । बार बार पूछना, बीच में पूछना नही पसंद है । उन्हे क्या पसंद है उसे कहते है ''जो औरत अपनी लज्जा रखे उससे खुश होते है । जब चले तो नजर नीचे रखे वह प्रिय है । ईधर उधर नजर करने वाले पर नही खुश होते है । वचनामृत में भगवानने स्पष्ट कहे है ।

लोगो का व्यवहार ऐसा होना चाहिए जो हमें अच्छा लगे । जो व्यक्ति हमे प्रिय लगता है उसे हम घर पर बुलाते है लेकिन जो अप्रिय लगता है उसे नही बुलाते है ।

उसी प्रकार अनंतकोटी ब्रह्मांडो के अधिपति सर्व अवतारी ऐसे हमारे ईष्टदेव जिन्हे खुश रखने के लिये प्रतिदिन पूजा अर्चना, भजन-भक्ति करते है । यदि खुश हो गये तो बेडा पार हो जायेगा । अर्थात् मोक्ष पक्का हो गया । लेकिन भगवान को प्रिय न हो ऐसे को भगवान के धाम में ले जायेगे ? मंदिर में बैठ कर भले भजन-भक्ति करे लेकिन भगवान की आज्ञा का पालन न करे तो क्या होगा ? अपने अंग दिखाई दे ऐसे वस्त्र पहनकर भगवान के पास बैठकर पूजा न करे उससे महाराज खुश नही होते है । इस लिये महाराजने शिक्षापत्री में श्लोक ३८ में आज्ञा किये है । ''वह वस्त्र जिससे अंग दिखाई दे वे हमारे सत्संगी न पहने ।

शि. श्लोक-१६१ और पतिव्रता ऐसी सुवासिनी स्त्री अपनी नाभि और धरी दूसरे पुरुष देखे ऐसा व्यवहार न करे । शरीर को वस्त्र से अवश्य ढके ऐसे महाराज के आज्ञा को भंग करके मंदिर में कितना भजन दान करे सब बेकार है । नाभि तथा छाती देखने से पुरुष के मन में विकार पैदा होता है । उनको पाप मिलता है । मंदिर में ऐसा पाप नही होना चाहिए। संक्षिप्त में मंदिर में आने का मुख्य उद्देश्य क्या है । मंदिर-मंदिर होता है । मर्यादा में रहन चाहिए । अंग प्रदर्शन के लिये नही है । ध्यान दे मंदिर में केवल भगवान को खुश करने के लिये आते है । शुद्ध मोक्ष का उद्देस्य होता है । भगवान तुरंत खुश होते है । तथा कल्याण करते है ।

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस

magazine@swaminarayan.in

"अब हमें कोई न्यूनता नही है"

- अतुल पोथीवाला (अहमदाबाद)

वचनामृत में श्रीहरि ने कई करिश्मा से युक्त वचन निरुपित किये है। उनें अब हमें कोई न्यूनता नही है। ये समझ अद्‌भूत कार्य करता है। सि वचनामृत की समझ वास्तव में अद्‌भूत है। ये वचन स्वयं में एक करिश्मा है।

विश्व अब ग्लोवल विलेज बन रहा है। बल्कि बन ही गया है। जीवन में भाग दौड अधिक हो गयी है। इन्फारमेशन टेकनोलाजी और टेकीकायूनिकेशन के विश्व व्यापी होने से होता मोबाईल घर-घर में आ गया है। मोबाई लेपटाप की स्वीच ओन करो ''कर लो दुनिया मुठ्ठी में ? माउस को इधर से उधर घुमाये तो सूचना का खजाना मिल जाता है। टी.वी. माध्यम तो कमाल कर दिया है। इससे अच्छे परिणाम की जगह खराब प्रभाव पड रहा है। मोबाईल के प्रयोग से तो चोटा बच्चा भी वंचित नही है।

चारो तरफ स्ट्रेस-टेन्शन में और डिप्रेशन की मात्रा बढी है। देश जितना विकसित हो रहा है वैसे रहने वाले स्ट्रेस तनाव में बढ रहे है। अमेरिका में डीप्रेशन से लोग काफी परेशान है।

मार्केट स्ट्रेटजी ऐसी होती जा रही है पैसा तेजी से बढ रहा है। यंग जनरेशन में विचार और आचार बदल रहा है। समय ही साथ मन का भार बढ रहा है।

जीवन तेजी से निकल रहा है। वर्षो पूर्व दिन जैसे धीरे धीरे बीतता था। आज तो दिन दौडने लगा है। सुबह से रात तक क्या किये। यह देखने का समय ही नही है।

ऐसे संयोग में तन और मन स्वस्थ रखना यह सरल नही है। अंत में योग और मेडिटेशन का सहारा लिया जा रहा है।

परमकृपालु श्रीहरि हम सभी के उपर ऐसी कृपा किये है वात न पूछे। सत्संगी के लिये मात्र वचनामृत ये मात्र ज्ञान से युक्त हरिग्रन्थ ही नही। परंतु सहज, स्वस्थ और निरामय जीवन जीने के लिये अमृतवचन निस्त्रित किये है। इन बचनो का श्रवण, मनन और निदिध्यास यदि रखे तो हमारा आचार, विचार और व्यवहार का परिवर्तन आया है।

''मुझे अब कोई न्यूनता नही है'' (ग.प्र.प्र. २५) एक अनोका अनुसंधान है। जिसाक लगातार सतत-मनन और निदिध्यास जगत व्यवहार की प्रवृत्तियो से कभी एट्रेस नही होता है। बल्कि मन पर नियन्त्र करता है। हमारे पास जो है उत्तम है'' ऐसे आत्मविश्वास बढ़ता रहे।

''हमे अब कुछ न्यूनता नही है'' इसकी प्रथम सीढ़ी यह है।

''निर्विकल्प उत्तम अति, निश्चय तव घनश्याम''

हमारे ईष्टदेव परमात्मा श्री सहजानंद स्वामी महाप्रभु का निस्चय कैसा होना चाहिए ऐसा बताते है - निर्विकल्प - जिसका स्वरुप और जिनकी सर्वोपरिता के विषय में कोई विकल्प नही होना चाहिए। एक मात्र एक ऐसे श्री पुरुषोत्तम नारायण ही मेरे भगवान है। ये सभी अवतार के अवतारी है। सभी कारणो के कारण और जगत की उत्पत्ति, स्थिति प्रलय के कर्ता है और सर्वोत्तम है। ऐसा दृमु और अचल निश्चय अधिक सरल बना देता है।

दूसरी सीढी : ''संत्संगी हो उसे भगवान की आज्ञा में परिवर्तन नही करना चाहिए'' ये त्यागी और गृहस्थ दोनो के लिये आज्ञा स्वरुप है। शिक्षापत्री प्रणालीनुसार जीवन बनाये 'सहज आनंद' और सहजानंद स्वरुप दोनो का इतर बना रहे।

तीसरी सीढी यह है : ''सत्संग में जो भगवान की वार्ता हो उसे धारण करके विचार करे। इस सत्संग का इतना प्रताप है कि जिस गुण की कमी होती हो। वह पूर्ण हो जाती है और निरुत्थान रुप में परमेश्वर स्वरुप का चिंतन होता है। (ग.प्र.प्र. ३०)

और सत्संग में जो भगवान की वार्ता होती है। उसे जानने समझने के लिये सत्संग अवश्य करना चाहिए। इस विषय पर परमेश्वर श्रीहरि एकदम स्पष्ट है। क्योकि ''विद्‌यादिक गुण वाले पुरुष का गुण जानने से परम फल

मिलता है । श्रीकृष्ण भगवान की भक्ति करना और सत्संग करना इन दोनो से रहित विद्वान भी हो तो अधोगति प्राप्त करता है।(शि. १४४)

इस तरह ये तीन सीढीयाँ : (१) ईष्टदेव महाप्रभुश्री स्वामिनारायण भगवान पर अति उत्तम विश्वास होना चाहिए।

(२) सत्संगी को भगवान के आज्ञा से बदलाव नहीं करना चाहिए।

(३) सत्संग का ध्यान रखकर रात-दिन सत्संग करना चाहिए और जहाँ भगवान की वार्ता हो उसका श्रवण, मनन और नदिध्यास करना चाहिए । अर्थात विचार करना चाहिए।

इन तीनो सूचनानुसार जीवन व्यतीत करना चाहिए । ''तो आप को कोई न्यूनता नही रहेगी'' इस प्रकार का ज्ञान अन्तर में आता है । यह लौकिक भाव नही है । श्रीहरि प्रेरित भावना है।इसका प्रभाव भी अद्‌भूत होता है।जीवन हर क्षेत्र में मन की स्वच्छता आती है।

यहाँ पर एक लाल बत्ती भी श्रीहरिने रखा है उसे भी ध्यान रखने जैसा है।

''अब हमें कोई कमी रही नही'' यह समझ लगातार विकसित करके भगवान की भक्ति-अवश्य करे । स्वयं को अकृतार्थ न माने।इन दोनो अवस्था से अवश्य बचे।

''जब से महाराज मिले है । और पहचाने है तब से सारे कार्य पूर्ण हुए है'' यही समझदारी विपरीत अवस्था में भी समभाव पैदा करती है.

कृतज्ञता किस की ? तो कृतज्ञता श्रीहरि के निर्विकल्प उत्तम निश्चय का, कृतंज्ञता श्रीहरि की आज्ञा पालन का वृतलता सहजानंज स्वामी प्रवार्तति सत्संग का भगवान के वार्ता की है।

ऐसी कृतज्ञता अंतर में लाना है। अब मुझे कुछ कमी नही है । इस समझ को पैदा करे । इसके द्वारा पूरे जीवन में श्रीमद् भगवतगीता में बताये समतायोग अनापास मिल जाता है।

ऐसी समझ ऐसा सहजानंदीय स्वरुप और आठ प्रहर सहजानंद प्रदान करते है ये सत्संग से जाना चा सकता है।

अनु. पेईज नं. ११ से आगे

अदब के साथ कई लोग खडे है। बहने नीचे धूप में बैठी है। उनका योगदान कम है क्या ? पीछे बैठकर माला फेर रही है। कभी आगे दिखाई नही देती है। ऐसे भक्तो कै पुण्य के प्रताप से यह मंदिर चल रहा है। अब कायमी यह शुरु कर दो, कोई यजमान नही सभी यजमान है । क्योकि ये देव हमारे ही नही सभी के है।प्रारंभ हम से करे।आज चेक जमा कर बता देगे।

इस महा महोत्सव के लिये मै प्रत्येक गाँव में जाऊँगा। भूतकाल में कोई क्या नही था । मैं नही जा सका तो लालजी जायेगे मैं जहाँ जाउ वहाँ लाल महाराज को भी ले जाये । सबको लगे मेरा भी इस में सहयोग है।किसी पर अधिक भार भी नही आयेगा।लोगो को आराम मिल सके।

पैसा एकत्र करने के लिये उत्सव नही होते है। भगवान मिले हम सब मिकर आनंद से उत्सव मनाये । पैसा आये तो सिरका दर्द बन जाता है । आवश्यक होने पर चेक में वापस कर देता हूँ। CRPF के लिये आवश्यकता से अधिक चेक आ गया था।

भगवान जैसे भगवान बिराजमान है । मै झूठ नही बोलता हूँ। यदी बोल दू तो उपवास करता हूं। उपवास दूसरा उत्सव है। नरनारायणदेव का प्रगट्योत्सव हो तब भी उपवास नहि और आज भी नही इसलिये सभी लोग प्रसाद का आनंद ले । भगवान तथा भगवान के भक्त के लिये क्या नही किाय जा सकता है । होता है आप सभी तैयारी रखे । पत्रिका में किसी का नाम नही छपेगा। नरनारायणदेव का यह दरबार है। देव का सानिध्य है देव की तप मूर्ति है रुपये की बात नही करना है । भगवान की बात करना है । भगवत चरणो की प्रधानता है । यह नही भूलना है । यु.के., कच्छ, उ.गुज., पंचमहल, साबरकांठा, झालावाड, प्रत्येक प्रान्त के भक्त संत आये है। देव के अभी दृष्टि के सामने बैठे है और हमेशा बैठना है।अंत में सभी का शुभाशीर्वाद प्राप्त हो।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

रामकृष्ण गोविंज जय जय गोविंद...... नारायण धून ब्रह्मलोक बुलंद स्वर मे, एक साथ कर तालियो की आवाज के साथ, पांच सौ परमहंसो के मुख से प्रभु की स्मृति सहित निकल रही है ..... और वातावरण में रजोगुण में से सतो गुण में बदल जाये । ब्रह्मानंद की यह मस्ती किसी मंदिर में नही, लेकिन अति समृद्द ऐसे हरिभक्त के यहाँ विवाह अवसर पर हो रहा है..... यह इसकी विशेषता है।

अहमदाबाद में मोहनलाल सेठ के यहाँ विवाह के अवसर पर सीसे तथा रत्नो से जडित मंडप में, उन्होने भगवान श्रीहरि और संतो को अधिक भाव से साथ विनिम्रता से आमंत्रण दिये थे । श्रीहरि संत वर्णी पार्षदो के साथ वहाँ पर आये । और थोडे समय के बाद आरती का समय हो गया तब वहाँ से जाने का प्रयास किये । शूरवीर हरिभक्त श्रीहरि का मंडप में आरती धुन करने को कहा । शि.श्लो.-४३ के अनुसार आरती धुन हुई । तत्पशात ''छपिया बाला छोडो देवाधिदेव दोरडो रे, दिसे दोरडिये दश गांठ रे...'' जैसे वृत्ति विवाह के पद बोले मंडप में हरिरस की भजन गायी गयी ।(भ.चि.प्र. ७६ कडी-३९)

सांख्ययोगी बाई भाई, तेने जावुं नहि विवामांई ।
कर्मयोगी जे जाय विवाय, ते पण गीत प्रभुजी ना गाय ॥
एह आ गन्या छे जो अमारी, सहु रहेजो क्षेम नरनारी ।

उपरोक्त अवसर का सुंदर विगतवार वर्णन सत्संगिभूषण महाशास्त्र के तीसरे अंश में उन-१२ और १३ में किये है । इस अवसर पर मोहनलाल शेठ ने श्रीजी मंडप में लाकर बहु मूल्य वस्त्र अलंकारो की पूजा किये । उस समय जो पीछवाई श्रीजीके सिंहासन की शोभा बढाता है । इस महाप्रसाद की अमूल्य पिछवाई धर्मवंशी आचार्यश्री को परम्परा सुरचित है । पू. बड़े महाराजश्री की अतिकृपा करके हरिभक्तो को दर्शन हेतु स्वामिनारायण म्युजियम में होल नं. ४ में रखा गया है।

इस प्रसादी के दर्शन मात्र से शूरवीर हरिभक्त, नियमधारी संत और धर्मप्रधान कृति वाले गुरु-शिष्य भगवान भक्त का सहज स्मरण होता है । व्यवहार में धर्म प्रधान कैसे रहे उसका उपदेश उसमें से मिता है।

सभी हरिभक्तो को श्रीजी प्रसादित पिछवाई का दर्शन करे और व्यवहार में धर्म की प्रधानता रखे।

– प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग यज्ञ की सूची अप्रैल-२०१९

दि. १४-०४-२०१९ डॉ. नरेन्द्रभाई भावसार – महेसाना

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति का अभिषेक कराने वालों की नामावलि अप्रैल-२०१९

दि. ०४-०४-२०१९	(प्रातः) गं.स्व. कांताबा जेठालाल राटोड – विरमगाम – ह. कनुभाई तथा भरतभाई तथा नरेन्द्रभाई – अहमदाबाद।
	(दोपहर) मावजी शिवजी पिंडोरीया तथा देवजी शामजी राबडीया (वुलवीच – लंदन)
	(शायं) चंद्रिकाबेन महेन्द्रभाई शुक्ल – नारणपुरा (सिडनी ओस्ट्रेलीया) – ह. हर्ष
दि. १४-०४-२०१९	चौधरी जयंतिभाई मोतीभाई – बदपुरा (हाल यु.एस.ए.)
दि. २१-०४-२०१९	घनश्यामभाई अमृतलाल भावसार – चि. मनीषने ओस्ट्रेलीया बिसा मिला उसके लिये – नवा वाडज

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि-अप्रैल-२०१९

रु।. ६७,०००/-	हंसाबेन सूर्यकांत पटेल – उंझा – प्रथम पेन्सन आया उसके लिये।
रु।. ५१,५७५/-	अरविंदकुमार इंदुलाल मोदी – चांदखेडा – श्री नरनारायणदेव के खुशी हेतु।
रु।. २७,३००/-	श्री प्रविणखुमार कुरजी केराई – ह. नवदिता प्रविण केराई – केरा-कच्छ-भुज।
रु।. १९,५७५/-	डॉ. लालजी हालाई वानकुवेर – केनेडा
रु।. १०,०००/-	डॉ. नरेन्द्रभाई भावसार – मेहसाना
रु।. ५,५५५/-	गोहिल मीनाबा मधुभा – भरुच
रु।. ५,०००/-	मीनाबेन के. जोशी – बोपल
रु।. ५,०००/-	अ.नि. करशन कानजी भगत – ह. जयंतिभाई भावसार
रु।. ५,०००/-	श्री भाईलालभाई करसनभाई – कनाडा
रु।. ५,०००/-	रमीलाबेन बाबुभाई पटेल – श्रीजी की खुशी हेतु – अडालज

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये – श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

प.पू. बड़े महाराजश्री के प्रागटोत्सव अवसर पर श्री स्वामिनारायण म्युजियम में संगीत समारोह

एकबार अकबर के दरबार में संगीत समारोह में एक दीपक के सामने तानसेन ने गाने के बाद दीपक प्रज्जवलित हो गया। इसके बाद दूसरे गायक का अवसर आया उन्होने ने एक पंक्ति गाई कि महल के सारे दीपक प्रज्जवलित हो गये। तानसेन के दिवान बोले कि इतना असर ? तो उसने कहा ''कि इसका पूरा गीत सुनने से अच्छा है कि हम जल मरे अच्छा होगा........

जीव को अलग-अलग संगीत की समझ और मापदंड होता है। हमारे धर्मकुल के संगीत की गहरी सुझ - समझ की परम्परा है। अच्छे - अच्छे संगीतज्ञ श्री प.पू. बड़े महाराजश्री के सामने छोटी-छोटी हरकतो पर ध्यान रखते है। ऐसे संगीत के अनन्य चाहक और जानकार व्यक्तित्व ऐसे प.पू. बड़े महाराजश्री का पाटोत्सव है। उसके उपलक्ष्य में संगीत की महफिल किस रुप में मना सकते है।

चो दरणो में मनाये गये संगीत समारोह का प्रथम चरण ११-४-१९ के दिन सायं ९ बजे इसके झारखंड से आमंत्रित कलाकार केडिया ब्रदर्स द्वारा सितार और सरोद की जुगलबंदी की गयी थी। तबला पर संगत पंडित कालीनाथ मिश्रा ने किया था। इस अवसर धर्मकुल संगीत यात्रा के साक्षी शा. स्वामी हरिप्रसाददासजी विशेष कर किल्ला पारडी से आये थे। प्रारम्भ में दीप प्रगट किया गया था। बाद में मंगळ का केक प.पू. बापजी द्वारा सभी को प्रसाद रुप में दिया गया था। कार्यक्रम के समय संगीत के साथ झूमते पू. बापजी के चरणो को देखकर संगीतकार अपने कला की सच्ची कद प्राप्त कर रहे थे। पू. लालजी महारजश्री विशेषकर संगीत सुनने आये थे।

ता. २१-४-१९ को प्रातः ७ बजे दूसरे चरण की सभा में सर्व प्रथम अहमदाबाद के कलाकार श्री विकास परीख अपने गायकी द्वारा श्री नरनारायणदेव की महिमा के पदो को गाकर श्रोताओ को मंत्रमुग्धकर दिये थे। तत्पश्चात मुंबई से आये स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजीने अपने नंद संतो द्वारा रचित और प.पू. बापजी के प्रिय राग पर आधारित पदो का गायन किये थे। इस गायन से प.पू. आचार्य महाराजश्री सहित सबके अर्न्तमन के दीपक की प्रज्जवलित कर दिये।

चैत्र वद-३ ता. २२-४-१९ को श्री स्वामिनारायण म्यूजियम में बडी संध्या में संत तथा हरिभक्त प.पू. बड़े महाराजश्री के जन्मोत्सव की शुभेच्छा दिये और आशीर्वाद प्राप्त करने हेतु आये थे।

– प्रफुल खरसाणी

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

तिलक चाँदला की महिमा

– शास्त्री हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

मित्रो ! आप का इतिहास में रस हैन ? तो यह बात शांति से पढे !

बात ऐसी है कि अहमदाबाद में पेश्वा का शासन था । और भाउ साहब अहमदाबाद के सुबेदार थे । उन्होने स्वामिनारायण भगवान के विरुद्ध षडयंत्र किया । भगवान ने साजिस का पर्दाफाश किया था । पेश्वा गलत सिद्ध हुए और स्वामिनारायण भगवानने अहमदाबाद में आने के लिये मना कर दिये । स्वामिनारायण भगवान अहमदाबाद से चले गये ।

इस बात को छ महीने बीत गये और माहौल बदल गया । अर्थात् अहमदाबाद में सत्ता परिवर्तन हुआ । ''एन्डूअ डनलप'' को अहमदाबाद का प्रथम कलेक्टर बनाया गया । ये अंग्रेज थे लेकिन भावुक और दयालु थे । अपने देश से आकर अहमदाबाद की सत्ता सम्भाले थे । ये प्रजा को ध्यान से देखते थे । उन्होने थोडी नवीनता दिखाईदी थी । लोगो के कपाल पर अनेक प्रकार के तिलक को देखते थे । वे देख कर कलेक्टर बोले यह क्या है ? इनके मन में भाव पैदा हुआ । लेकिन पूछे किससे ? कही पर शासन करना है तो स्थानीय प्रजाका सहयोग आवश्यक है । कलेक्टर ने नौकरी में स्थानीय लोगो की भर्ती किया । उसमें कुबेरसिंह छडीदार नौकरी में आये । उनका काम कलेक्टर के साथ रहना था । शहर की स्थिति कैसी है ? उन्हे बताना पडता था ।

उन्होने एकबार कुबेरसिंह से पूछे कि मुझे समझमें नही आ रहा है कि मै जब से अहमदाबाद आया हूँ । तब से लोगो के कपाल पर अलग-अलग लीला-लाल प्रतीक देख रहा हूँ । ये सब क्या है ? कुबेरसिंहने बताया कि ये तिलक है ये माताजी के भगत है । तिलक हो वो महादेव के भगत है । लेकिन आप के कपाल पर तो १०१ जैसे मार्क वाला दो रेखाबीच में बिन्दू जैसा है । कुबेरसिंह कहते है कि ये हमारा स्वामिनारायण भगवान का तिलक है । कलेक्टर पूछे स्वामिनारायण भगवान अर्थात् कौन ? आप बताये । ये तो अहमदाबाद नहीं आते है । अहमदाबाद न आने का क्या कारण है ? कुबेरसिंह बोले आप से पूर्व के सत्ताधीशो ने मना कर दिया है । कारण क्या ? स्वामिनारायम भगवान शराब, माँस, हिंसा को निधेष करना चाहते ते । यह उन लोगो को अच्छा नही लगा । इस लिये उन्हें मना कर दिया ।

तो अब स्वामिनारायण भगवान को संदेश भेजो कि अब पेशवा सत्ता समाप्त है । उनकी सत्ता गई साथ में आदेश भी गया । अब अंग्रेज शासन है । और स्वामिनारायण भगवान को यहाँ पर बुलाईये ।

कुबेरसिंह छडीदार बोले आप की बात सही है । हम बुलाये इससे अच्छा आप बुलाये तो ठीक रहेगा । तब उस समय कलेक्टरने श्रीजी महाराज को पत्र लिखे । अपने संप्रदाय के परम्परानुसार पत्र लिखा गया । अत में कलेक्टर साहब का हस्ताक्षर लिया गया ।

की लोग कुबेरसिंह से बोले ये राजनीतिक लोग है इन पर विश्वास न करे । मीठा बोलते है होते किसी के नही है । पेशवा तो जानते थे । अंग्रेज तो अपरिचित है । ये लोग ऐसा बोलते है जैसे डिब्बे में कंकड आवाज करता है । हम यह समझ नही पाते है । श्रीजी महाराज को बुलाकर कुछ खराब करे तो ? कुबेरसिंह छडीदार कहते है कि ऐसा नही है । ये भावुक व्यक्ति है । हमे महाराज से विनती ही तो करना है । अपने ईष्टदेव तो सर्वज्ञाता है । ये तन की भी जानते है और मनकी भी जानते है । इनके चित्त में कपट होगो तो महाराज जान जायेगे । महाराज

को योग्य लगेगा वही करेगे । यह संदेश भगवान को भेजे । किसी ने कहा महाराज की बात उनसे कौन किये । कुबेरसिंह बोले मैं नही किया हूँ । उन्होने हमारे तिलक चाँदला को देखकर बात किये कि स्वामिनारायण भगवान को बुलाये । शेष ऐसा बोले कोई तकलीफ हो तो हम यहां पर बैठे है । और सहायता करेगे ।

ये अंग्रेज अधिकारी स्वामिनारायण भगवान का तिलक और चाँदला देखकर प्रभावित हुए थे । कैसी खुशी की बात है । जो तिलक न करे उन्हे शर्म आनी चाहिए । तिलक का प्रभाव अधिक है । तिलक देखकर सामने वाले के मन में स्वामिनारायण भगवान का विचार आ ही जाता है कि यह भगवान का भगत है।

शिक्षापत्री भाष्य में शतानंद स्वामी ने तिलक चाँदला का महिमा कहे है । कुबेरसिंह का चांदला देखकर अंग्रेज अधिकारी जिज्ञासु हुआ । श्रीहरि को आमंत्रण भेजा था ।

मित्रो ! कैसी अच्छी बात है । हमारे ईष्टदेव स्वामिनारायण भगवान को अहमदाबाद में प्रवेश करना वर्जित था । इसी अहमदाबाद में स्वामिनारायण भगवान को सद्‌भाव के साथ आमंत्रित किया गया था । प्रभु जय जयकार के साथ आये थे । इस लिये तिलक चांदला गौरव से करे । उसमे शरम न करे ।

•

ध्यान से सत्संग

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

भक्त भगवान का हो कठिन कार्य है – निष्कुलानंद स्वामी के ईन शब्दो पर विचार किये तो पता चले कि भक्त बनना सरल नही है । इसके लिये त्याग करना पडता है । सब कुछ चला जाये पर सत्संग जारी रखना पडता है । सब कुछ जाने के बाद वह सच्चा सहजानंदी सिंह है।

हम ऐसे सच्चे भगत की कहानी पढ़ेगे । मोरबी राज्य में ठाकोरजी रवाजी शासन करते थे । उनके राज में महा कवि देदल चारण राजकवि थे । इनका अग्रणी स्थान था । ये वीररस से भरे शब्दो से कायर में भी शूरता भर देते थे । ऐसी ताकत उनके वाणी में थी । इसी प्रकार करुणरस, हास्य रस, की प्रस्तुति करते थे । पूरा डायरा वाह-वाह करता था ।

समाज की एक विशेषता होती है । कि जिसकी समाज में प्रसंसा होने लगती है । उसका समाज में कुछ लोग विरोधअवश्य करते है । ऐसे की तत्व कवि देदल की निंदा करने लगे तथा अवसर भी ढूढने लगे । इस में भगवान की ईच्छा थी कि कवि देदल महाकवि ब्रह्म बोल प्रतापी कविराज स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी का समागम हुआ । तथा देदल सत्संगी बन गये । गले में तुलसी की माला, लालट पर तिलक देदल की शोभा बढाने लगे ।

कवि देदल के इस बदलाव से विरोधियो को अवसर मिल गया वे लोग ठाकोर रवाजी के पास गये । महाराज की जय हो बापू की जय हो बापू आप से एक बात कहने आये है । अब तो हद हो गयी है । बापू विस्मयपूर्वक कहने लगे क्या तकलीफ हुई ? बात क्या है ? हमारे कवि बहुत अच्छे है । उनमे की गुण है लेकिन संकोच के साथ कहना पड रहा है अभी बडी भूल किये है । बापू बोले, बात क्या है ? कवि देदल तो समझदार है । उनसे भूल तो नही होगी यदि हुई होगी तो समझायेगे । सुधार कर लेगे । बोलिये क्या भूल है ? बापू हम लोग तो वैष्णव धर्म वाले है अपने धर्म का कविने तिरस्कार किया है । राजधर्म छोडकर कंठी बाँधे है । राजा के सहारे रहना और राजधर्म की अवगणना करना । यह कैसे होगा ?

कच्चे कान के बापू को विरोधियो की बात समझ में आने लगे । हम कल बात करेगे । कल दरबार में आये तक कंठी तोड़ने का आदेश दे । कवि माला तोड दे तो अच्छी बात है । अपने धर्म का तिरस्कार नहीं करेगे । यदि न माने तो आपका अपमान होगा ।

(पेईज नं. २३)

॥ भक्तिसुधा ॥

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
(एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर कालुपुर मंदिर हवेली) "आत्मा" अनुभव गया है।
(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

हम लोग कहते है आराम से रहे अंतर में भार नही रखे। उन्होने विप्र को करियाणी के पाँचवे वचनामृत में महाराज समझाये है कि देह के प्रति कितनी जानकारी है तथा साक्षीपण के जिम्मेदार कितनी है ? बुद्धि नख से शिख तक व्याप तरहा है। वह शरीर की सभी क्रियाको जानता है। (साक्षी अर्थात् भगवान) साक्षी का ज्ञान जीव का ज्ञान है। अपने अंदर कितना सूक्ष्म विचार आये उसे साक्षी को सूचना है। और ये तब जीव को भी पता है।

तो शरीर के अन्दर इन्द्रियो को कार्य करने की शक्ति बुद्धि कि विचार करने की शक्ति इस कारण से ''जीव'' और ''बुद्धि'' है। तो देह मे ''जीव'' व्यापित रहता है। उसका ज्ञान नही होता है। लेकिन बुद्धि का ज्ञान होता है। जीव को जानना हो तो जीव कैसे ज्ञात हो। जैसे अग्निकी ज्वाला बढती है। घटती है। आकाश में बादल जैसे चलता दिखता है। उसकी प्रेरक हवा है। लेकिन हवा नही दिखाई देती है। आकाश में बादल चलते दिखाई देते है। वायु का पत्ता चलता है। उसी प्रकार इन्द्रियो की कार्य करने की क्षमता और बुद्धि की सोचने की शक्ति पर जीवकी उपस्थिति दिखाई देती है।

महाराज ने प्रथम पाठ में ७८ वे वचनामृत में 'अन्वयपणुं' और 'व्यक्तिरेकपणुं' ये दो प्रकार से जीते है। शरीर के लिये सुख दुःख जीव स्वयं का मानता है। वह जीव अन्नयपण है। और जब तीनो देह के सुख-दुःख अपने समझे वह जीव व्यक्ति रेक है। 'आत्मा' जीव मैं है। लेकिन दिखाई नही देता है। जैसे क्षार वाला पानी है। यह खारा है। दिखाई नही देता है। उसी प्रकार देह में आत्मा है। लेकिन दिखाई नही देता है। पानी मे वाष्य उबालने से निकलता है। उसमें से क्षार निकलजाता है। उसी प्रकार लोग तप करके वासना रुपी जल वापित कर देते हे। आत्मा को अनुभव होता है। इसी प्रकार व्यक्ति शरीर और आत्मा का भेद जान सकता है। वह आत्मनिष्ठ व्यक्ति है। वास्तव में हम ही आत्मा है। सब कुछ शरीर करती है और कष्ट सहती है।

कितना भी समझ ले, पुस्तक लिखा डाले लेकिन जब तक भगवान के स्वरुप का ज्ञान नही होता है। तब तक कल्याण नही होता है। ज्ञान के लिये दो प्रकार है। एक कोई कह दे यह कमरा है। कमरे के अंदर टेबल है। हमें ज्ञात हो जाता है। तब तक स्वयं रुम खोलकर देख न ले तब तक टेबल कैसा है। ज्ञात नही होता है। उसी प्रकार भगवान है। हम भक्त है। भगवान का स्वरुप स्वयं जानना पडता है। स्वयं ज्ञान पर अधिक प्रभाव पडता है। वचनामृत जितने बार पढेगे उतनी वार नया ही लगेगा। जितना बुद्धि का उपयोग करे वो बुद्धि ही होगी। स्वंय वाचन से अंतर में आयेगा जो भूलता नही है। इस लिये प्रतिदिन अध्ययन करते रहना चाहिए।

किसी ने पूछा कि शक्कर खाये है ? कैसा है। वह बोलेगा मीठा है। कितना मीठा है। उसके लिये खुद स्वाद लेना पडेगा। बंधन मुक्ति के लिये स्वंय प्रयास करना पडेगा। हम स्वयं चेतन है। इस शरीर में आत्मस्वरुप है उसका कार्य मात्र साक्षी का है। वह शरीर के सभी अंदर और इन्द्रियो के कार्यो से सुख-दुःख की अनुभूति से अनासक्त है। मान ले व्यक्ति झगडले। और तिसरा व्यक्ति

केवल देखता है। देखने वाले को कोई प्रभाव होता है ? जो व्यक्ति बोलता है उसके उपर प्रभाव डालता है। लेकिन जो व्यक्ति देखता है उसे कुछ असर नही होता है। इसी प्रकार जो आत्मा साक्षी रुप में देखता है उसे कुछ भोगना नही पडता है। सुख-दुख की अनुभूति मात्र अहंकार को होती है। हम बोलते है हमारे अहम को ठेस पहुची है अथवा मन दुःखी हो गया है। आत्मा सनातन सत्य है। उसे कुछ प्रभाव नही पडता है। जो शरीर कार्य करते हुए दिखता है वह आत्मा की हाजिरी में करता है। और परिवर्तन शील है। जो परिवर्तनशील है वह सनातन सत्य नहीं हो सकता है। उसे उसी तरह सत्य का ज्ञान करना पडेगा। अर्थात् सत्य क्या है ? सत्य वह है जिसे वास्तविक रुप में समझा जा सके वही सत्य है।

हम जो इन्द्रियो से जो देखते है उसे हम सत्य मान लेते है। उससे आगे नही विचारते है। लेकिन जो इन्द्रियो से देखते है वह सत्य नही होता है, सीमित सत्य होता है। उदाहरण स्वरुप मिट्टी का बर्तन देखने से वह गिलास है जो आकार देखकर कहते है कि यह गिलास है। लेकिन वास्तव में वह मिट्टी है। स्वरुप दृष्टि में गिलास है। उसका स्वयभु स्वरुप मिट्टी है। इसे अध्यारोपण दृष्टि कहते है। मिट्टी साक्षी रुप में है। जैसे मिट्टी में से गिलास बनाने की प्रक्रिया होती है। गिलास में मिट्टी साक्षीरुप है। गिलास बनते देखा और टूटभी गयी उसे भी देखे। उसका आकार बदल गया। गिलास से मिट्टी हो गयी। इसमें मिट्टी नहीं बदली है। इसी प्रकार हमारे शरीर में आत्मा है। जो सनातन सत्य है. साक्षी रुप में है। इसमें कोई बदलाव नहीं होता है। जीव एक योनि से दूसरे योनि में जाता है। उसे कुछ भोगना नही पडता है। भोग तो अहंकार करता है। अहंकार अर्थात् मैं, कर्ता भाव इस मान्यता को छोडना है। इसके छोडने पर स्वयं मोक्ष मिल जाता है। आत्मा मोक्ष स्वरुप है। यह मात्र शरीर में स्थित होकर साक्षी भाव से देखता है। इस शरीर से मोक्ष मिल सकता है। लेकिन श्रम करना पडेगा। कर्म करिये लेकिन अन्तर में बोझ नही आयेगा।

"मैं हटा, हरि आये"

– सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

परमात्मा मनुष्य के अलावा किसी को बुद्धि नही प्रदान किये है। परमात्मा का पद मनुष्य के उपर महान उपकार है। बुद्धिमान को प्ररमात्मा अखंड रुप से देखते रहते है कि कैसे उपयोग कर रहे है। ईश्वर सार-असार विवेक युक्त बुद्धि दिये है। इसका उपयोग समझदारी से करना चाहिए। जिससे ईश्वर खुश होते है। नही तो ईश्वर नाराज हो जाते है। परमात्मा में विश्वास रखने वाले लोग आस्तिक इस लोक में भौतिक रुप सुखी होते हुए परमात्मा को प्राप्त करने के लिये परमात्मा के होकर रहते है। जीवन सदैव अभिमान रहित जीते है। उनमें कभी अपने शरीर मन, धन, वैभव का अभिमान नहीं आता है। उनका पूरा जीवन अखंड परमात्मा के आज्ञानुसार रहता है। इस लोक और परलोक में शाश्वत सुख और शांति के लिये अखण्ड परमात्मा की प्रसन्नता हेतु उनका जीवन का उद्देश्य होता है। परमात्मा को क्या पसंद नही है। वह जाने-अनजाने में न हो ऐसे लोग सदैव ध्यान देते है। जीवन में परमात्मा ही जिसके स्वामी है। मैं उनका दास-सेवक हूँ ऐसी भावना रखते है।

परमात्मा के आज्ञा विरुद्ध कार्य करने से परमात्मा नाराज हो जाते है। क्यो कि वह पाप कर्म है। परमात्मा के आज्ञानुसार कार्य करने पर प्रभु खुश होते है। क्योकि वह पुण्य कर्म है। पाप कर्म मनुष्य को परमात्मा से दूर ले जाता है। प्रत्येक पापी कर्म का मूल अभिमान होता है। प्रत्येक मनुष्य को परमात्मा को खुश करने के लिये। मैं हूँ ! कर्ता पदके अभिमान का त्याग करना चाहिए। विना लाग-लगाव के परमात्मा के आज्ञाका पालन करना चाहिए। मै शब्द विवेक का नाशक है। प्रत्येक व्यक्ति में स्वमान और आत्म गौरव होता है। जब मर्यादा खत्म होती है। तब मिथ्याभिमान आता है। मिथ्याभिमान से व्यक्ति की प्रगति रुक जाती है। अपने

पराये हो जाते है। सभी लोग ऐसे व्यक्ति से नफरत करने लगते है। रावण, कंस, जरासंघ, समर्थ होने के बाद भी उनका पतन हुआ । उसका मुख्य कारण मित्याभिमान था । सुखी होना हो तो मिथ्याभिमान का त्याग करना चाहिए।

अहंकार और अभिमान, देहात्मबुद्धि के कारण जन्म लेती है। मैं हूँ इसी भाव से उसे पोषण मिलता है। प्रत्येक व्यक्ति को किसी न किसी पर धन, सम्पदा, विद्या का अभिमान होता है। सत्ता और धन शाश्वत नही है। ये बात समझ में आ जाये तो अभिमान समाप्त हो जाता है। मिथ्याभिमान केवल संसारी ें होता है ऐसा नही है । संन्यासी को भी नही छोडता है । संसारी को भौतिक वस्तुओ का अभिमान होता है । त्यागियो को त्याग का वैराग्य और भक्ति का अहम् होता है। ये इन मदो से दूर हो जाये तो प्रभु के कृपा के पात्र बन सकते है । मिथ्याभिमान को त्यागे विना भगवान नही मिलते है । यदि अहम करना ही है तो ''मैं आत्मा हूँ और में भगवान का भक्त हूँ ऐसा अभिमान करना चाहिए । इसके अलावा का अभिमान मोक्ष मार्ग का अवरोधक है । त्याग और सत्कार्य के अभिमान का ईश्वर के दर्शन में बाधक होता है। इस बारे में एक रसप्रद प्रसंग है।

एकबार शिवजी और पार्वतीजी एक स्मशानगृह के पास से जा रहे थे । स्मशान गृह में एक संन्यासी खिचडी बना रहे थे । वे मात्र लंगोट पहने थे । पूरे शरीर पर भस्म लगाये थे। धूप में धुनी लगाये बैठे थे । उनका तप और त्याग देखकर पार्वतीजी उनके प्रति सहज हो गयी । और भोलेनाथ से देवीजी बोली कि ''प्रभु देखे, यह संन्यासी आप को प्राप्त करने के लिये उग्र साधना कर रहा है। फिर भी अभी तक आप कृपा नही किये है। कृपया दर्शन देकर धन्य करे । पार्वतीजी का यह भाव संन्यासी के प्रति देखकर भगवान सदाशिव मंद स्मित करने लगे और बोले कि देवी आप बहुत भोली है। मेरे कृपा का पात्र बने अभी इसकी योग्यता नही हुई है। इसे त्याग का मद है। जब मद समाप्त होगा तो मेरी कृपा होगी । यह बात भवानी को अच्छी नही लगी । वह संन्यासी की परीक्षा लेने की ईच्छा व्यक्त की, बाद में शिव-पार्वती दोनो भिखारी का भेष धारण किये । संन्यासी के पास लाकर अन्न की याचना करने लगे । संन्यासी के पास खिचडी के अलावा कुछ नही था। उसने गरम खिचडी की तपेली शिवजी को दे दिया । तब शिवजी बोले 'महाराज' आप भी तो भूखे होगे। इसलिये आधी खिचडी ही दे। और आधी आप वापस ले ले। यह सुनकर संन्यासी के अन्दर की छिपी अहमवृत्ति उछली और बोलने लगा कि मुझे पहचानते हो ? मैं कोई सामान्य साधु संन्यासी नहीं हूँ। मैं मालवा का त्याग करने वाला भतृहरि हूँ ।मैने राज्य का त्याग किया है। खिचडी छोडने में क्या है ? मैं तीन दिन से नही खाया हूँ। फिर भी मैं खिचडी वापस नही लूँगा। संन्यासी में त्याग का भाव दिखाई दे रहा था। उसकी भाषा-व्यवहार को देखकर पार्वतीजी समझ गई भोलेनाथ सही है। संन्यासी कृपा योग्य नही हुआ है। यह विचार कर शिव और पार्वती चल दिये । दासना दुश्मन हरि कदि होय नही, जेम करशे तेम सुख थाशे । जिसके पक्ष में जगत के नाथ उसके साथ समस्त जग होता है । भक्त कवि नरसिंह महेता की कविता है जो ''हूँ करु, हूँ करु, अेज अज्ञानता, शंकटनो भार जे श्वान ताणे'' में पद सदैव सार-असार को विस्मृत करता हूँ। वास्तव में आत्म श्लाधा आत्मा विनाश करती है।

त्याग वैराग्य का अभिमान सूक्ष्म होता है। वह ईश्वर प्राप्ति में बाधक होता है । स्वामिनारायण भगवानने वचनामृत में कहे है कि भगवान की प्राप्ति हेतु त्यागी गृहस्थ का कोई मेल नही है। जो समझदार है उसका संसार बड़ा है । संसार का त्याग, वर्ण आश्रम का पद लेकर सज्जनता नही आती है। गृहस्थ हो या त्यागी जब तक मिथ्याभिमान का त्याग नही करेगा। तब तक ईश्वर प्राप्ति असंभव है। मैं

समाप्त होने पर हरि प्राप्त होते है। फिर भी अहंकार समाप्त नही होता है। और रहता भी नही है। बहुत विचित्र होता है। अहंकार ! अहम् अर्थात् मैं आपको ''मैं लिखूतो उसमें कितना खराबी है। ये बात विचित्र है न ? छोडिये बात को कालिया कोशी नाम का पक्षी होता है। किलहटी से छोटा और गोरैया से बड़ा होता है। ये कभी जमीन पर बैठता ही नही है। कुछ भी न मिलने पर ढेला, पत्थर उपर बैठती है लेकिन नीचे नही बैठती है। समतल भूमि पर कभी बैठता ही नही है। मर जाने के बाद ही बैठता है। ये उसका ऐसा अहंकार है। वह हूँ, हूँ, हूँ, हूँ करता रहता है। कबूतर घुं, घुं, घुं, घुं बोलते है। चूहा चूं, चूं, चूं, चूं करते है। गोरैया चीं, चीं, चीं, चीं करती है। भ्रमर गुंजन करता है। एक मानव ही मैं, मैं, मैं, मैं बोलता है। मिथ्याभिमान से मैं, मैं करने से जीवन का अधपतन होता है। इहलोक-परलोक दोनो खराब होता है। इसलिये मुमुक्षुओ को भी मैं भी का त्याग करना चाहिए।

इसलिये हम सभी को अपने व्यक्तिगत जीवन को सदा मंगलकारी, सुख शांतिमय और परम संतोषी बनाना है। तो परमात्मा से विमुख करे ऐसे अभिमान वाले स्वभाव को हमेशा के लिये त्याग देना चाहिए।

मैं टण्ये हरि ढूकडा........

अनु. पेईज नं. १९ से आगे

आप नरम होकर इसके प्रति उदार हो जायेगे तो सभी अग्रणी सत्संगी हो जायेगे। तो राजधर्म का क्या होगा ? उन्होने दूसरे दिन की तैयारी कर लिये।

दूसरे दिन सुबह हुई। सभी दरबारी उपस्थित हुए। कविश्री अपने आसन पर बैठे गये। कवि कविता पाठ करने के लिये उठे तब रवाजी ठाकोर बोले - कविराज अभी से धर्म क्यो बदल दिये ? बापू इस प्रकार के प्रश्न से कविराज विस्मित हुए। लेकिन विलक्षण प्रतिभा वाले कविराजने उत्तर दिया। बापू ये धर्म तो एक ही है। हमारा वेदधर्म, हिन्दु धर्म, मानव धर्म, उसमें बदलाव तो नही हो सकता है। अपने धर्म की रक्षा हेतु कलिकाल में स्वामिनारायण भगवान प्रगट हुए है। उनके प्रभाव से लाखो लोग बैष्णव बने है। मै भी यही रास्ता स्वीकारता हूँ। स्वामिनारायण भगवान और उनके संतो के प्रताप से जगह-जगह सत्युग आ गया है। ''आदर सबका सहारा एक का'' खुद विचारवाला सम्प्रदाय है।

इतना सुनकर बापू बोले कि आप वैष्णव सम्प्रदाय पर स्वीकार न हो तो कंठी तोड डाले। कवि देदलने सहजानंदी शेर की तरह दहाड दिये। यह शक्य नही है बापू ऐसी बात सुनकर रवाजी बापू बोले आज से आप का हमसे रिस्ता समाप्त है। मोरबी राज्य छोडकर चले जाये ये आदेश है।

कवि देदल हँस कर बोले - बापू ! सद्गुण और सज्जनो का सम्बन्धपूरा नही होता है। फिर भी आप की ईच्छा। मैने आप को धर्म के लिये धन, सम्पत्ति, राज्य परिवार सबके त्याग की कहानी सुनाये है। तथा प्राण भी त्यागने की कथा सुनाये है। मुझे तो केवल मोरबी छोडना है। यह सामान्य है। इसका पालन अभी से मैं करता हूँ। कवि देदल ने गाँव छोड दिया। पद त्याग कर मालिया आ गये। प्रभु की कृपा तो देखे। मालिया के ठाकोर मोरबी कवि को आदर सहित अपने दरबार में रख लिये। पहले से अधिक सुख कविराज पाये।

मित्रो ! यह विचार करने वाली बात है कवि देदल मोरबी राज्य में मान-पान, कीर्ति, जाने दिये। कंठी-तिलक सिर पर रखे थे। हमे इस बात का ध्यान रखना है कि हमें तिलक और चाँदला करना है। भक्त होना कठिन है। लेकिन जिस पर भगवान की कृपा होती है। वह सत्संग को सिर पर रखता है।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद मंदिर में श्रीहरि प्राकटोत्सव रामनवमी के समैये मनाये गये

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान के प्रागट्योत्सव दिन चैत्र सुद-७ रविवार को पूरे उल्लास से मनाया गया था।

प्रातः ६-३० से ७-०० बजे के बीच अक्षरभुवन में विराजमान बाल स्वरुप श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव अभिषेक प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ हाथो से विधिवत रुप से पूर्ण हुई। जिसके यजमान प.भ. प्रवेशभाई सोनी (मांडलवाले) परिवार ने अलौकिक लाभ लिये थे।

दोपहर १२ बजे मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्रजी भगवान के प्रागट्योत्सव की आरती खूब धाम-धूम से हुई। समैया का दर्शन करने हजारो हरिभक्तो शहर-गाँव से आये थे।

रात ८ बजे से १० बजे तक मंदिर के विशाल प्रसादी चौक में सुंदर सुशोभित सामियाना में हमारे सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध गायक श्री जयेश सोनी द्वारा नंद संतो द्वारा रचित कीर्तन भजन-रास-गरबा हुआ। रात्रि १० बजे के बाद हमारे ईष्टदेव सर्वोपरी श्री घनश्याम महाराज का प्रागटोत्सव की आरती खूब धामधूम से मनाई गयी। हजारो हरिभक्तोने प्रागटोत्सव का दर्शन करके धन्य हुए। समैया का सुंदर आयोजन कोठारी जे.के. स्वामी, भंडारी जे.पी. स्वामी, भक्ति स्वामी आदि संत मंडल और युवक मंडल और हरिभक्तो की सेवा सराहनीय थी। सभी ने पंजीरी प्रसाद ग्रहण किये। (कोठारी शा. नारायणमुनिदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाना श्री नरनारायणदेव जयंती - रामनवमी हनुमानजी दयंती उल्लास पूर्वक मनाया गया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा यहाँ के मंदिर के महंत स.गु. स्वामी नारायणप्रसाददाजी तथा स.गु. महंत शा. स्वा. उत्तमप्रियादसजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा में ता. २१-३-१९ के दिन श्री नरनारायणदेव जयंती के अवसर पर श्री घनश्याम ओच्छव मंडल द्वारा भव्य रुप से मनाया गया। दोपहर श्री घनश्याम ओच्छव मंडल द्वारा भव्य रुप से मनाया गया। दोपहर १२ बजे जन्मोत्सव की आरती की गयी। महंत स्वामी सभी हरिभक्तो को गुलाब की पंखुडीयो तथा अबीर-गुलाल एवम् केसुडा के सुंदर रंग से रंगे थे। अंत में खजूर-लावा का प्रसाद बाँटा गया था। यजमान का लाभ घनश्याम ओच्छव मंडल ने लिया था।

श्रीहरि प्रगटोत्सव

चैत्र सुद-९ रविवार के दिन अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर मेहसाना में चैत्र-९ को श्रीहरिजयंती के शुभ दिन दोपहर को १२ बजे मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्रजी भगवान का जन्मोत्सव आरती की गयी।

रात में ८ से १० बजे ओच्छव मंडल द्वारा अंत में आरती का अवसर मेहसाना के अ.नि. नर्मदाबेन शंकरलाल मोदी ह. हसमुखभाई मोदी, पार्थ और जय आदि परिवार यजमान बनकर ठाकुरजी को झूले में झूला ने का लाभ उठाये। रात्रि १० बजे सर्वोपरी श्रीहरि की प्रगटोत्सव आरती की गयी। जिस में हजारो भक्तोने भाग लिया चैत्र सुद-१५ को श्री हनुमानजी का पूजन अर्चन-अभिषेक और अन्नकूट आरती की गयी। जिस में यजमान पोपटभाई ईश्वरभाई पटेल और प्रसाद के यजमान मुकेशभाई फूलचंद मोदी परिवार रहा था। (पार्थ राज रसोइया - महेसाना)

अहमदाबाद से छपैयाधाम पदयात्रा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. १८-२-१९ से २८-३-१९ तक अहमदाबाद कालुपुर मंदिर श्री नरनारायणदेव का दर्शन करके छपैयाधाम के दर्शन हेतु पदयात्रा का आयोजन किया गया था। जिस में स्वामी परोपकारदासजी (पेथापुर) स्वामी संशयविमोचनदासजी (बावला) ऋषि स्वामी (मूली) और नारायण स्वामी ईन संतो के साथ २० हरिभक्त जुडे थे। सर्वोपरि छपैयाधीश बालस्वरुप धनश्याम महाराज, श्री नरनारायणदेव और समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से पदयात्रा निर्विध्न पूर्ण हुई। (भक्ति स्वामी)

धमासणा श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्रीहरि जयंती समूह महापूजा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा अ.नि. स.गु. स्वामी विष्णुप्रसाददासजी की दिव्य प्रेरणा से उसी प्रकार कालुपुर मंदिर के स.गु. भंडारी स्वामी जे.पी. स्वामी के आशीर्वाद एवम् सह प्रेरणा से धमासणा श्री स्वामिनारायण मंदिर में चैत्र सुद-९ श्रीहरि प्रगटोत्सव के दिन सुंदर समूह महापूजा विप्र श्री प्रियव्रतभाई द्वारा की गई। कई लोग सपत्नी के साथ बैठकर पूजा का लाभ लिये। दोपहर १२-०० बजे श्री राम जनमोत्सव आरती और रात्रि में १०-१० मिनट पर श्रीहरि जन्मोत्सव आरती उल्लास पूर्वक की गई। गाँवके सभी हरिभक्त दर्शन करने धन्यता का अनुभव किये थे।

कोठारी श्री और गाँव के हरिभक्तोने सुंदर व्यवस्था किये थे । (उर्मिक पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडल का १०७ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् जेतलपुरधाम के महंत स्वामी स.गु. शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव के अन्तर्गत मांडल श्री स्वामिनारायण मंदिर का १०७ वाँ पाटोत्सव ता. १०-४-१९ से १५-४-१९ तक भव्यता से मनाया गया था ।

इस अवसर पर रात्रि में कथा का सुंदर आयोजन स.गु. शा. स्वामी भक्तिनंदनदासजी (जेतलपुर) वक्ता पद पर हुआ था ।

कथा के समय चैत्र सुद-९ के दिन श्री घनश्याम जन्मोत्सव अत्याधिक उल्लास के साथ मनाया गया था । दोपहर १२ बजे श्रीराम जन्मोत्सव की आरती की गई । इस प्रसंग पर आयोजित समूह महापूजा का कई हरिभक्तो ने लाभ लिया था ।

ता. १५-४-१९ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री आये थे । उनके शुभ हाथो से ठाकुरजी की पूजा-अभिषेक किया गया था । तथा आरती भी किये थे । इसके बाद महादेवजी मंदिर के प्रांगण में (परावास) सभा में भी ये थे ।

पाटोत्सव के यजमान प.भ. डॉ. सवजीभाई पटेल धर्मकुल पूजन यजमान प.भ. लाभुभाई पटेल माडंल आदि परिवार धर्मकुल की पूजा किये थे । तथा आशीर्वाद प्राप्त किये थे । तीर्थो से आये संतो की प्रेरक वाणी के बाद प.पू. महाराजश्री ने आशीर्वाद प्रदान किये । भाईयो-बहनो के दोनो मंदिर में प.पू. महाराजश्री ने अन्नकूट आरती किये थे। अंत में सभी लोग प्रसाद लेकर धन्य हुए । सभी भक्तो ने प्रेरणारुप सेवा प्रदान किये थे । (कोठारीश्री मांडल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली में श्री हनुमान चालीसा पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन से उसी प्रकार मंदिर के महंत वी.पी. स्वामी के आयोजन से ता. १५-४-१९ से १९-४-१९ तक श्री हनुमान जयंती के उपलक्ष्य में संत तुलसीदास कृत श्री हनुमान चालीसा का पंचान्ह पारायण स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (पी.पी. स्वामी जेतलपुरधाम) के वक्तापद से सुमधुर संगीत युक्त होकर हजारो धर्म-प्रेमी कथा प्रेमीयो ने कथा पान का आनंद लिये ।

इस कथा के यजमान पद पर डॉ. हर्षदभाई चुनीलाल भगत तथा डॉ. उषाबेन हर्षदभाई भगत, स्नेह भगत, प्रीतिबेन, कायना और पुष्पाबेन गीरीशभाई भगत (बारडीयावाला) परिवार था ।

कथा के समय श्री हनुमान जन्मोत्सव श्री रामजन्मोत्सव, भव्यता से मनाया गया था । मारुती यज्ञ की व्यवस्था की गई थी ।

ता. १८-४-१९ के दिन प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री आकर बहनो को दर्शन एवम् आशीर्वाद दिये थे ।

ता. १९-४-१९ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री आये थे । उनके शुभ हाथो द्वारा यज्ञ का प्रारम्भ और कथा की पूर्णाहुति की गई थी । सभा में यजमान परिवार द्वारा धर्मकुल की पूजा की गई .

प.पू. महाराजश्री यजमानो का सन्मान करके स्मृति रुप भेट दिये थे । तीर्थो से संत आये थे । अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्री सभा में सबको आशीर्वाद प्रदान किये थे । (शा. भक्तिनंदन स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोली का ३२वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से तथा जेतलपुर धाम के महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. पी.पी. स्वामी, महंतश्री के.पी. स्वामी की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोली का ३२ वाँ पाटोत्सव ता. २३-३-१९ के दिन धामधुम से मनाया गया था । जिस में ठाकुरजी का अभिषेक, अन्नकूट आरती और महापूजा जेतलपुर के पू. शा. पी.पी. स्वामी, पू. श्याम स्वामी और शा. भक्ति स्वामी आदि संतो के हाथो से किया गया था । संतो ने कथा वार्ता किये यजमान परिवार और सभी हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये थे । (घनश्याम आर. ठक्कर)

बालासिनोर श्री स्वामिनारायण मंदिर में प्रसादी के श्री हनुमानजी की जयंती

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव देश के अर्न्तगत बालासिनोर श्री स्वामिनारायण मंदिर में प्रसादी के श्री हनुमानजी महाराजजी विराजमान है । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के श्री हनुमानजी मंदिर का सुंदर जीर्णोध्धार किया गया है । श्री हनुमानजी का दर्शन करे । इस में सारंगपुर हनुमानजी की आभा दिखाई देती है । चैत्र सुद-१५ श्री हनुमान जयंती के बालासिनोर मंदिर में प्रात: ८ से ४ बजे तक मारुती यज्ञ किया गया था । श्री हनुमानजी दादा का भव्य अन्नकूट करके आरती की गयी थी । कालुपुर मंदिर के केशवचरण स्वामी और घनश्याम स्वामीने श्री हनुमनजी की महिमा समझाये थे। सुंदरकांड का आयोजन तथा प्रसाद की व्यवस्था थी ।(कोठारीश्री बालासिनोर)

पेथापुर श्री स्वामिनारायण मंदिर से अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव के दर्शन की पदयात्रा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से ता. २०-४-१९ के दिन पेथापुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में बिरामजान सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान का दर्शन करके शास्त्री स्वामी परोपकारदासजी और पूजारी घनश्याम स्वामी के साथ ७० जितने हरिभक्त अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर पदयात्रा करके शा. २४-४-१९ के दिन श्री नरनारायणदेव का दर्शन करके सभी धन्य हुए ।(शा. स्वा. धर्मप्रवर्तकदास - महंतश्री पेथापुर)

श्री नरनारायणदेव वरिष्ठ (वरिष्ठ नागरिक) गांधीगनर (से-२) मंदिर द्वारा आयोजित सर्वोपरी छपैयाधाम में कथा

सर्वोपरी सर्व अवतारी श्री स्वामिनारायण भगवान कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से तथा धर्मकुल के आशीर्वाद से नये स.गु. महंत शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) से-२ श्री स्वामिनारायण मंदिर द्वारा और प.भ. रमेशभाई अंबालाल पटेल (कुडासण) के मुख्य यजमान पद परत तथा प.भ. रमेशभाई अंबालाल पटेल (साबरमती) के सह यजमान पद पर सर्वोपरि छपैयाधाम में ता. २३-४-१९ से २७-४-१९ के बीच श्री घनश्याम बाल चरित्र महाग्रंथ की पंचदिनात्मक पारायण स.गु. शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी वक्ता पद से संगीत से पूर्ण हुआ। इस अवसर पर गांधीनगर से महंत श्री शा. पी.पी. स्वामी, वडनगर मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी नारायणवल्लभदासजी उनके शिष्य शा. स्वा. धर्मविहारीदासजी छपैयाधाम के महंत स्वामी स.गु. ब्र. स्वा. वासुदेवानंदजी आदि संत सभा में आकर अमृतवाणी का लाभ दिये। सम्पूर्ण कथा के बीच सभा संचालन स.गु. शा स्वामी नारायणमुनिदासजी शोभित किये थे। ४०० उपरांत गांधीनगर-अहमदाबाद आदि आये हरिभक्तोने अलौकिक धाम से कथाश्रवण करके धन्य हुए।(कोठारी शा. नारायणमुनिदासजी)

पालडी-कांकज श्री स्वामिनारायण मंदिर का १३ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

श्री नरनारायणदेव देश के अन्तर्गत श्री स्वामिनारायण मंदिर - पालडी कांकज में १३ वाँ वार्षिक पाटोत्सव अधिक सुंदर रुप से पूर्ण हुआ । प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा के साथ आशीर्वाद से उसी प्रकार जेतलपुर धाम मंदिर के स.गु. महंत पू. शा. आत्मप्रकाशदासजी स्वामी एवम् स.गु. पु. शा. पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन अनुसार पालडी कांकज गाँव के सभी लोगो सहकार से ता. २७ अप्रैल-२०१९ के दिन पाटोत्सव मनाया गया था। इस उत्सव में जेतलपुरधाम के मंदिर के महंत पू. कृष्णप्रकाशदासजी स्वामी, पू. भक्तिस्वरुपदासजी, स्वामी पू. धर्मनंदनदासजी स्वामी के सानिध्य में पवित्र भूदेवो द्वारा षोडशोपचार से भगवान की महापूजा अभिषेक, अन्नकूट आरती की गयी थी। अंत में संतोने सत्संग सभा में सभी को आशीर्वाद दिये।

इस पाटोत्सव में प.भ. जयदीपसिंह राजेन्द्रसिंह चौहान परिवार यजमान पद स्वीकार करके धन्य हुए । सम्पूर्ण उत्सव भक्तिभाव पूर्ण वातावरण में मनाया गया था । गाँव के लोग धार्मिक उत्सव में भाग लिये।(कोठारीश्री पालडी-कांकज)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर रणजीतगढ (ता. हलवद) पाटोत्सव

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की परम कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से ता. २३-३-१९ के दिन टिम्बा श्री स्वामिनारायणमंदिर का ५ वाँ पाटोत्सव अवसर पर पाटोत्सव अवसर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथो द्वारा ठाकुरजी का अभिषेक अन्नकूट आरती विधिवत रुप से पूर्ण हुआ। सभा में सभी को आशीर्वाद प्रदान किये । सभा का संचालन कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी ने किया था । सत्संग सागर स्वामीने कथा-वार्ता का लाभ दिये थे। तीर्थो से संत भी आये थे। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर रणजीतगढ (ता. हलवद) पाटोत्सव

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की परम कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् आशीर्वाद से समस्त धर्मकुल की खुशी से तथा पू. स.गु. स्वामी भक्तिहरिदासजी की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव के अर्न्तगत रणजीतगढ श्री हरिकृष्णधाम में चैत्र सुद-९ को श्रीहरि जयंती के अवसर पर यज्ञ तथा दो घंटे की हरिधुन रखी गयी थी। वहाँ मंदिर का १७ वाँ पाटोत्सव उल्लास के साथ मनाया गया । संत लोग कथा-वार्ता-धुन-कीर्तन करके हरिभक्त खुश हुए। ठाकुरजी का अभिषेक-अन्नकूट आदि किया गया था । सभी लोग प्रसाद खाकर खुश हे।(प्रति. अनिल दूधरेजिया - ध्रांगध्रा)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर एलन टाउन (अमेरिका) श्रीहरि प्रगटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. महाराजश्री महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा यहाँ पर सेवा पूजा करने वाले स्वामी धर्मकिशोरदासजी के मार्गदर्शन से अपने हिन्दू श्री स्वामिनारायण मंदिर वडतालधाम एलनटाउन में चैत्र सुद-९ शनिवार के दिन श्रीहरि प्रगटोत्सव और श्री राम जन्मोत्सव उल्लास से मनाया गया था। दोपहर १२ बजे श्री रामजन्मोत्सव की आरती की गयी थी । स्वामीने सर्वोपरि बालस्वरुप श्री घनश्याम महाराज के बालचरित्र की सुंदर कथा सुनाई गई । मर्यादा पुरुषोत्तम राम की कथा की गयी थी । ठाकुरजी के समक्ष धुन-भजन, कीर्तन करके रात्रि १०-१० पर श्रीहरि प्रगटोत्सव को मनाया गया था। बडी संख्या में हरिभक्त दर्शन करके धन्य हुए। यजमान परिवार की सेवा की सराहना की गयी।(प्रविण शाह)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद(गुजरात)पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

(१) अंनली मंदिर में हनुमान जयंती के अवसर पर पारायण अवसर पर आरती उतारते हुए पू. महाराजश्री । (२) बालासिनोर मंदिर पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी की आरती उतारते हुए पू. महाराजश्री । (३) मेहसाना मंदिर में रामनवमी और हनुमान जयंती उत्सव । (४) मांडल मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर कथा पारायण । (५) कांकरिया मंदिर में रात्रि कथा पारायण । (६) राणीप मंदिर में श्रीहरि प्रागट्योत्सव । (७) माणेकपुर मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर कथा–कीर्तन करते संत। (८) बावला के संत हरिभक्तो द्वारा छपैयाधाम की पैदल यात्रा । (९) नरोडा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा गरीब बच्चो को भूता–चप्पल वितरण।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2018-2020
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2020

अहमदाबाद मंदिर में रामनवमी को श्री स्वामिनारायण भगवान का प्रागटोत्सव

NND - CALENDAR

अहमदाबाद कालुपुर मंदिर द्वारा
केलेन्डर तथा निर्णय की नये एप एड्रोइड और
आई.ओ.एस. के लिये डाउन करने के लिय उपलब्ध

www.swaminarayan.in info@swaminarayan.in
Follow Us @ nndkalupurmandir
Daily Darshan Whatsapp no. +91 9909 967104

Praful Kharsani